Www.MadaariMedia.Com

मदार दर्शन

लेखक

डा० इक़तिदा हुसैन जाफ़री ''आमिर''

मदार इशाअत घर मकनपुर शरीफ़

कानपुर नगर

E-mail: shoaib.a.jafri@gmail.com
Mob. 8090273226

सर्वाधिकार सुरक्षित

कृति	: मदार दर्शन
लेखक	: डा० इक़्तिदा हुसैन जाफ़री''आमिर'' 9450137958 amir.makanpuri@gmail.com
शब्द संयोजन	: फ़ैज़ ग्राफ़िक्स मकनपुर शरीफ़
चित्रॉकन	: यावर अल्ताफ़
प्रथम संस्करण	: 1984
द्वितीय संस्करण	: 2012
तृतीय संस्करण	: 2014
नवीन संस्करण	: 2016
प्रतियॉं	: 1000
प्रकाशक	: मदार इशाअत घर मकनपुर शरीफ़
मूल्य	: 60/-रु०

समर्पण

बेगम चीनियाँ के नाम जिनका हर क्षण मुनाफ़े की तिजारत में विलीन रहता है जिसका प्रतिफल हश्र के दिन प्राप्त होगा।

तथा

उन सज्जनों के नाम जो औलिया अल्लाह से वास्तविक प्रेम करते हैं और हश्र के दिन के जवाब के लिये सदैव तैयार रहते हैं।

पुस्तक जो आपके हाथ में है.............................!

हज़रत सैयद बदी उद्दीन अहमद ज़िन्दा शाह मदार रज़ि० पर लिखित हज़ारों पुस्तकें संग्रह उर्दू, अर्बी, फ़ारसी, बांगला इत्यादि भाषाओं में सदैव से प्रकाशित होते आरहे हैं जिनका अपने स्थान पर विशेष महत्व है हिन्दी भाषा में अभी तक कोई उल्लेखनीय संग्रह अथवा पुस्तक प्रकाशित नहीं हो सकी हिन्दी में अत्यधिक आवश्यक्ता के कारण यह छोटी सी पुस्तक जो आपके हाथ में है को प्रस्तुत करते हुए गौरान्वित हो रहा हूँ ।

हिन्दी प्रेमियों के अति निवेदन पर प्रस्तुत पुस्तक में मेरा विचार है कि न केवल अनुवादित एवं भावार्थिक लेख लिखने का प्रयास किया जाये बल्कि जिस उल्लेख पर जो भी लेख प्रस्तुत किया जाये उसके प्रत्येक अंश पर भर पूर प्रकाश डाला जाये जो अपने में अद्वितीय हो ।

परन्तु यह विचार भी सत्यता का प्रतीक है कि अर्द्ध शिक्षित एवं अशिक्षित लोग भी प्रत्येक बात का स्पष्ट एवं परिपूर्ण ज्ञान प्राप्त कर सकें और प्रस्तुत पुस्तक से लाभान्वित हों ।

चन्द आदरणीय महापुरुषों की मुझ पर दयालुता के कारण अति प्राचीन पुस्तकें एवं ग्रंथ प्राप्त हुए हैं जिनको मैं अपना सौभाग्य समझता हूँ और आपके समय का बहुमूल्य भाग इस पुस्तक के लिये लेना चाहिता आशा है कि समय निकाल कर पुस्तक का अध्यन तथा मनन अवश्य करें गे । यदि पुस्तक में ग़ल्ती अथवा भूल प्रतीत हो तो उसे आलोचाना की दृष्टि से न देखें बल्कि अवगत करायें ताकि तृटि को दूर कर भविष्य में पूर्ण ध्यान रखा जाये ।

जो लोग हजरत बदी उद्दीन अहमद ज़िन्दा शाह मदार की जीवनी के इच्छुक हैं उनके लिये यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध हो ।

हमारा आशय आपकी पूर्ण सन्तुष्टि से है

डा० इक़्तिदा हुसैन जाफ़री "आमिर"

सहायक पुस्तकें

जिनमें हज़रत ज़िन्दा शाह मदार का कहीं आंशिक कहीं सविस्तार वर्णन किया गया है ।

सीरतुस्सहाबा वत्ताबईन बग़दाद, तारीख़ ख़ुल्फ़ाये अरब व स्लाम, गुलज़ारे अबरार, सत्रह मजालीस, बहरुल मुआनी, अख़्बारुल अख़ियार, बहरे ज़ख़्ख़ार, तज़क्रतुल मुत्तक़ीन, तज़क्रतुल किराम, तज़किरतुल फ़ुक़रा, बदीउल अजायब, सईदे अज़ल, क़ुरआनी तक़रीरें, गुल्ज़ारे बदी, सत्रहवीं शरीफ़, दुर्रुल मुआरिफ़, मदार का चॉंद, तारीख़े बदीई, बोस्ताने अहमदी, अल्कवाकिबुददरारिया, सफ़ीनतुल औलिया, कश्फ़ुल महजूब, लताईफ़े अशरफ़ी, समरातुलक़ुदुस, मुन्तख़बुल अजायब इत्यादि ।

दर्गाह हज़रत ज़िन्दा शाह मदार रज़ीअल्लाहअन्हु
दारुन्नूर मकनपुर शरीफ़
बिल्हौर
कानपुर नगर - यू०पी० - भारत

इस्लामी सभ्यता का एतिहासिक प्रतीक मकनपुर शरीफ़ का परिचय

इस्लामी सभ्यता का एतिहासिक प्रतीक मकनपुर शरीफ़ जिसकी औरंगज़ेबी इमारतें मुग़ल कालीन शानो शौकत की प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। मकनपुर शरीफ़ की अपनी अलग संस्कृति है यहाँ के निवासी फ़ार्सी मिश्रित शुद्ध उर्दू बोलते हैं। जो अत्यन्त मृदु एवं लुभावनी है तथा मुस्लिम सभ्यता का प्रज्जवलित प्रमाण है। शेरवानी पजामा कलंगीदार तुर्की टोपी से विभूषित इस्लामी सभ्यता के साथ डोलते बुज़ुर्ग यदा कदा नज़र आ ही जाते हैं। बात चीत का लहजा चाल चलन की नफ़ासत व नज़ाकत में आज भी नवाबी ठाट झलकता है और मुहम्मद साहब के ज़माने की याद को ताज़ा करता है। इनका आचार व्यवहार इस्लामी शिक्षा की सजीव आकृति तथा मुहम्मद साहब के चरित्र एवं शिष्टता का स्वच्छ दर्पन है। यहाँ अधिक तर लोग देश विदेश में भ्रमण कर इस्लाम की शिक्षा एवं उपदेशों इत्यादि का प्रचार करते हैं। प्राकृतिक सौन्दर्य से ओत प्रोत एवं लखौरी ईंटों एवं पत्थरों के भव्नावशेष तथा प्राचीन क़बरें मकनपुर शरीफ़ के गौरव पर प्रकाश डालती हैं। मकनपुर शरीफ़ का इतिहास में एक विशिष्ट स्थान है एक स्वर्णिम अध्याय है।

सर्व विदित हो कि सुप्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित सूफ़ी सैयद बदी उद्दीन कुतबुल मदार ज़िन्दा शाह मदार के पदार्ण के उपरान्त मकनपुर शरीफ़ सुनसान वन के रूप में था इसके निकटवर्ती क्षेत्रों में आर्य समाज का प्रचलन था जहाँ तक मकनपुर शरीफ़ के आबाद होने के चिह्न मिलते हैं वह आपके शुभागमन के बाद के हैं। बीते काल के अछूते पृष्ठों को टटोलने से ज्ञात होता है कि हज़रत ज़िन्दा शाह मदार तथा आपके अनुयाइयों के पदार्पण के पश्चात मानने वालों इत्यादि की भीड़ एकत्रित होने लगी फिर इस बीहड़ ने क़स्बे का रूप धारण कर लिया। इस क़स्बे का तत्कालीन नाम ख़ैराबाद तथा इसके बाद हज़रत मक्कन सरबाज़ मदारी के नाम पर मक्कनपुर रखा गया जो बाद में मकनपुर हो गया।

मकनपुर शरीफ़ विभिन्न धर्मों का हर काल में प्रधान केन्द्र रहा आरम्भ से ही लक्षाधि हिन्दू मुसलमान शासक इस महा पुरूष के प्रशंसक रहे इसका सबसे बड़ा कारण विभिन्नता में एकता संदेश समन्वय मानवता का बर्ताव इत्यादि। यही कारण था कि हिन्दू मुस्लिम शासकों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया और ज़िन्दाशाह मदार के अनुयाइयों को प्रत्येक प्रकार की सुविधा प्रदान करते रहे इन हज़रात को फ़ैसले आदि करने का भी हुकूमत की ओर से अधिकार प्राप्त था। इसकी पुष्टि हर सह ख़्वाजगान की औलाद के पास सुरक्षित दस्तावेज़ों से होती है। .

यह वो आदर्श स्थान है जहाँ तमाम औलिया अल्लाह ने अपने सर झुकाए जहाँ तमाम भाग्य शाली बादशाहों राजा महाराजाओं ने अक़ीदत के फूल चढ़ाये श्रद्धांजलियाँ अर्पित कीं तथा यहाँ हाज़िर होकर जो प्रमाण छोड़े वो आज भी भवनों इत्यादि के रूप में जीते जागते प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। मकनपुर शरीफ़ की ऐतिहासिक इमारतें अधिकतर आस्ताने ज़िन्दा शाह मदार से सम्बन्धित हैं। .

आस्तानए ज़िन्दा शाह मदार

लगभग 1.5 कि०मी० के क्षेत्र में आस्ताने शरीफ़ की सीमा पर पाँच अत्यन्त विशाल फाटक हैं तथा चार दरवाज़े दो फाटक दो दरवाज़े दक्षिण दिशा में दो फाटक एक दरवाज़ा उत्तर दिशा में तथा एक फाटक एक दरवाज़ा पूर्व दिशा में है आस्ताने शरीफ़ को सात भागों में विभाजित किया गया है जो सात हरमों के नाम से प्रसिद्ध हैं। .

आस्ताने शरीफ़ की निचली सतह इस बात का प्रमाण है कि हज़रत ज़िन्दा शाह मदार के पदार्पण के उपरान्त यहाँ एक तालाब था क्यों कि आस्ताने शरीफ़ की सतह क़स्बे की सतह से 10–12 फ़िट से अधिक नीची है। .

पहला हरम

रौज़ह शरीफ़ :

जिसे रौज़ह शरीफ़ कहा जाता है हज़रत ज़िन्दा शाह मदार की समाधि इसी में

स्थित है। 31.5 वर्ग फ़िट क्षेत्र फल की साधारण पत्थर की वर्गाकार इमारत है जिसे शासक इब्राहीम शर्क़ी जौनपुर ने 1418 ई० में बनवाया था। इस पर पॉच सुन्हरे कलस हैं गुम्बद वाला कलस जिसमें सवा मन सोना व्यय हुआ है शाह मक्कन सरबाज़ मदारी ने नज़ किया था शेष कलस इब्राहीम शर्क़ी के नज़्र करदा हैं इनका तॉबे वाला कलस शोरूम में महफ़ूज़ है। मक़बरे शरीफ़ की चारो दीवारों में चार दरवाज़े हैं जिनमें संगे मरमर की जालियॉ लगी हुयी हैं ये औरंगज़ेब आलमगीर ने नज़्र की थीं। पहले ये दरवाज़े बन्द थे सिर्फ़ एक खिड़की लगी हुयी थी।दर्शनार्थी इन्हीं जालियों से मज़ार शरीफ़ की ज़्यारत करते हैं रौज़ह शरीफ़ के गुम्बद की यह विशेषता कि इसकी छाया ज़मीन पर नहीं पड़ती। पहले हरम में प्रवेश हेतु दक्षिण जाली के नीचे एक छोटी खिड़की है। .

मज़ार शरीफ़ :

पवित्र समाधि ''क़ब्र'' जिसे हर समय दो सादा और पॉच रेशमी ग़िलाफ़ छुपाये रहते हैं। लगभग 1.5 फ़िट ऊँची तथा 9 फ़िट लम्बी है। चूँकि हर नीचे वाला ग़िलाफ़ अपने ऊपर वाले ग़िलाफ़ से इतना बड़ा होता है कि ऊपर का ग़िलाफ़
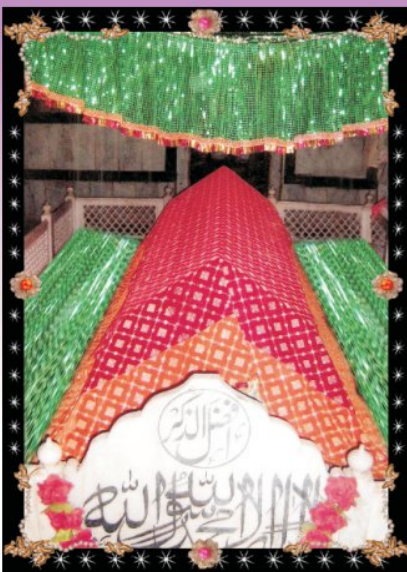
पूरा और शेष ग़िलाफ़ों के सिर्फ़ किनारे जालियों से दिखाई देते हैं नीचे के दानों ग़िलाफ़ इस प्रकार बदले जाते हैं कि दो हज़रात पड़े हुए ग़िलाफ़ के सरहाने वाले दोनों कोने पकड़ते हैं और दो लोग पांयती वाले दोनों ग़िलाफ़ों के कोनों के साथ बदलने वाले ग़िलाफ़ों के दो कोने पकड़ के आगे की ओर बढ़ते हैं इस प्रकार की बिना इसके कि मज़ार शरीफ़ खुले दोनों ग़िलाफ़ बदल जाते हैं। इसपर पॉच ज़र्री चादरें चढ़ा कर इनके कोनों पर संग मरमर के वेट रख देते हैं जिससे चादर दबी रहे फिर इत्र इत्यादि मल कर पैरों के बल बाहर आ जाते हैं उपरोक्त विधि

आस्ताने के आदाब में सम्मिलित है समाधि न तो कभी खुली रही और न ही इसे किसी ने देखा है।

दूसरा हरम

जन्नती दरवाज़ा :

जिस अहाते में रौज़ह मुबारक है उसे हरमे दोम अथवा दूसरा हरम कहते हैं। इसमें गाना पका हुआ खाना रौशनी तथा स्त्रियों का जाना वर्जित है। यह पक्के फ़र्श का 20 फ़िट चौकोर अहाता लगभग 20 फ़िट ऊँची दीवारों पर सीमित है इसमें दो फाटक और एक दरवाज़ा है दक्षिण पश्चिम की दीवारों के कोनों पर फाटक हैं पूर्व की दीवार में दरवाज़ा है यह दरवाज़ा जन्नती दरवाज़ा कहलाता है। यह उर्स के अवसर पर वर्ष में एक बार खुलता है। इसकी निकास सातवें हरम में है।

लम्बी ज़ंजीर :

पश्चिमी फाटक पर दो छोटी मीनारें जिनमें पीतल की कलसियाँ लगी हुयी हैं इब्राहीम शर्क़ी शासक जौनपुर की आज भी प्रशंसा में विलीन हैं इस फाटक के आगे एक लम्बी ज़ंजीर लटक रही है इसमें गॉंठ लगा कर लोग मिन्नत मॉंगते हैं। .

फाटक :

दक्षिणी फाटक मिस्टर ह्विर्टसन कलक्टर कानपुर की अक़ीदत मन्दी का प्रतीक है जिसको 1876 ई० में निर्माण कराया था। ये प्रशंसात्मक कार्य ह्विर्टसन के नाम के साथ सदैव जीवित रहने वाला अनोखा कार्य है क्यों कि मेले तथा उर्स के समय एक ही फाटक से आने जाने वालों को अधिक कठिनाई होती थी अब ऐसे समय पर ये फाटक अत्यन्त सहायक है। .

अब पश्चिमी फाटक हाज़री हेतु तथा दक्षिणी फाटक निकास हेतु। इन दोनो फाटकों की निकास हरमे सोम यानी तीसरे हरम में है जिसे साकर दरबार (सांकल दरबार) कहते हैं।

तीसरा हरम

इसमें प्रमुख्य चीज़ें इस प्रकार हैं मिस्टर ह्विर्टसन वाले फाटक पर एक ख़ूबसूरत बरामदा सन् 1923 ई० में मिस्टर गिले साहब कलक्टर कानपुर द्वारा निर्मित है साकर दरबार की सीमा ऐसी संगीन दीवारों से सीमित है और इसमें आने जाने के लिए दो विशाल फाटक तथा तीन बड़े दरवाज़े हैं।

एक फाटक दक्षिणी दीवार में है यह फाटक आस्ताने शरीफ़ की सीमा पर स्थित उन पॉच फाटकों में गिना जाने वाला पहला फाटक है इस को ''फाटक पुश्त ख़ाना'' कहते हैं। फाटक के पूर्वी पहलू में शेख़ रहमत अली ख़ॉं बरेलवी का बनवाया हुआ दालान है जिसे ''आईने वाला दालान'' अथवा नीचे वाला दालान कहते हैं। पहले इस दालान में एक बड़ा सा आईना (दर्पन) लगा था । दर्शनार्थी इसमें रौज़ह शरीफ़ के प्रतिबिम्ब की ज़्यारत करते थे। परन्तु अब इस दालान के आगे टिन पड़े हुए हैं।

जमीअत ख़ाना :

पश्चिमी दीवार में दो दरवाज़े एक बड़ा फाटक है एक फाटक एक दरवाज़ा चौथे हरम में खुलते हैं इसी दीवार में रौशनी हेतु गुलदस्ते नुमा सैकड़ों छोटे छोटे ताक़्चे बने हुए हैं। इन्हें ''मेंहदियॉं'' कहते हैं। फाटक पुश्त ख़ाना के पश्चिमी पहलू में

जुड़ा हुआ यानी दक्षिणी दीवार में एक सुद्रण दालान है यह ''जमीअत ख़ाना'' के नाम से प्रसिद्ध है इसे नवाब दलील ख़ॉ ने शाह जहॉ के शासन काल में बनवाया था। इस दालान के दोनों सिरों पर हुजरे बने हुए हैं पूर्वी हुजरे को ''तोशख़ाना'' तथा पश्चिमी हुजरे को ''सुलह ख़ाना'' के नाम से याद किया जाता है।

चिराग़दान :

प्राचीन काल का एक सुदृढ़ चिराग़ दान रखा हुआ है जिसका चिराग़ संग मरमर का है जिसमें लगभग एक किलो तेल आ जाता है। चिराग़ का काजल लोग ऑखों की बीमारी में प्रयोग हेतु ले जाते हैं।

दारुल अमान :

सुलह ख़ाने की उत्तरी तथा साकर दरबार की पश्चिमी दीवार में मिली हुयी एक सहख़री मस्जिद है जिसको सन् 1603 ई० में दौलत ख़ॉ रुक्न दरबार देहली ने बनवाया था। इस फाटक को दारुल अमान कहते हैं जो इसी मस्जिद के उत्तरी पहलू में एक विशाल फाटक है।

कुरआन ख़्वाना एवं शोरूम :

इसी फाटक के उत्तर में मिला हुआ एक

संगीन दालान है जिसे ''कुरआन ख़्वाना'' कहते हैं इसका निर्माण मचल लाल पुत्तू लाल खत्री ने करवाया था। तीसरे हरम का एक दरवाज़ा इसी दालान में है इसे सन् 1796 ई० में खोला गया था। यही दरवाज़ा चौथे हरम में खुलता है। इसी दीवार में मेंहदियों के बाद डाक्टर अल्हाज सैयद मुहम्मद मुक़्तिदा हुसैन जाफरी द्वारा नव निर्मित दालान है और अन्त में शोरूम है इसमें हज़रत शाह मदार के समय के तथा बादशाहों राजाओं नव्वाबों इत्यादि द्वारा भेंट पोशाकें फ़रमान तथा अन्य आवश्यक सामिग्री सुरक्षित है। इसकी सुरक्षा का दाइत्व कलीद बरदार मौलाना सैयद अक़्दस हुसैन जाफ़री का है। इसी के समीप एक दरवाज़ा है जो आस्ताने शरीफ़ की सीमा के चार दरवाज़ों में दूसरा है।

चौथा हरम

पाकर दरबार :

चौथा हरम पाकर दरबार के नाम से भी मशहूर है इसके कोने में पाकर का एक विशाल प्राचीन पाकर का वृक्ष खड़ा है इसी वृक्ष के कारण इस हरम को पाकर दरबार कहते हैं।

कुतुब फाटक :

पाकर दरबार के उत्तरी छोर पर एक फाटक है जिसे ''कुतुब फाटक'' कहते हैं। इससे निकलते ही पानी की टंकी, समीप में ज्योति कुआँ है तथा इसके समीप एक शिकस्त मस्जिद है जिसके निशान ही शेष हैं और कुछ पुरानी कुछ नवनिर्मित क़बरें हैं।

अल अव्वल शाह का मक़बरा :

कुतुब फाटक के समीप पश्चिम छोर पर भीतरी भाग में छोटा दालान है इसी से सटा हुआ अल अव्वल शाह का मक़बरा तथा इस मक़बरे से मिला हुआ पाकर दरबार की पश्चिमी दीवार में एक बड़ा संगीन एक बड़ा संगीन सुदृढ़ दालान है जिसे बादशाह शाह आलम ने बनवाया था। इसके पास वह कोठरी है जिसमें तहख़ाना है इसे ''ख़ज़ाना''भी कहते हैं इसी दालान
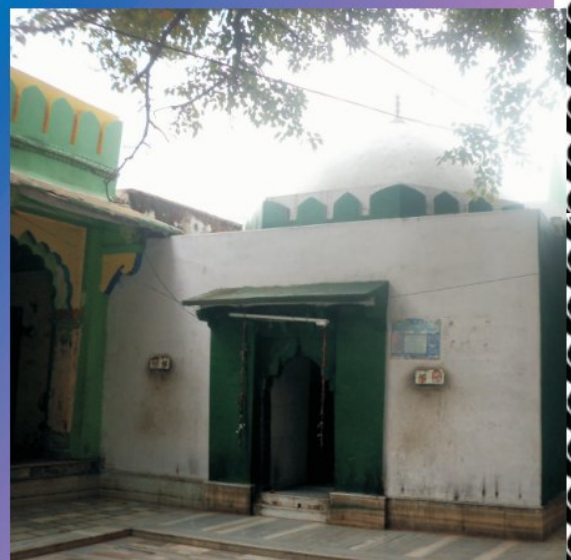
की दीवार से मिला हुआ एक विशाल फाटक है इस फाटक की निकास पाँचवें हरम में है फाटक से मिली हुई मियाँजी तालिब की मस्जिद है। जिसे क़ाज़ी मुतहर कल्ला शेर की कोठरी भी कहते हैं। क़ाज़ी साहब इसी कोठरी में रहा करते थे।

पाकर दरबार की दक्षिणी दीवार में एक जाली लगी हुयी है इससे लोग ख़्वाजा मुहम्मद अरगून जो हज़रत जिन्दा शाह मदार के उत्तराधिकारी हैं के

मज़ार शरीफ़ की ज़्यारत करते है। इसी दीवार के कोने में एक दरवाज़ा है जो आस्ताने शरीफ़ की सीमा पर तीसरा दरवाज़ा है।

पाँचवाँ हरम

दम्माल ख़ाना एवं पेश ताक़ :

दम्माल ख़ाना एवं बारह दरी के नाम से प्रसिद्ध पाँचवाँ हरम चौथे हरम के फाटक के उत्तरी सिरे से मिला हुआ पेश ताक़ के नाम से जाना जाने वाला सुदृढ़ दालान है इसके आगे संग मरमर का बड़ासा टुकड़ा रखा हुआ है इसे आलमगीरऔरंगज़ेब

समाधि में लगवाने हेतु लाए थे परन्तु अनुमति न मिलने के कारण यह पत्थर पड़ा रह गया श्रद्धालु इसे घिस कर मुँह के छालों और पेट की बीमारियों में प्रयोग करते हैं।

डेगें :

पेश ताक़ से मिला हुआ एक दालान है इसी में उत्तरी छोर पर कोठरी है दालान के आगे कुआ है कुए के समीप दो बड़ी डेगें रखी हुई हैं। बड़ी डेग जिसमें

लगभग 8 कुन्तल चावल पकते हैं। ताँबा धातु की है। दूसरी ताँबा लोहा मिश्रित धातु की बनी है। महाराजा ग्वालियार तथा दबीरुल मुल्क मुंशी टिकैत राय अवध द्वारा भेट की हैं।

मदरसा रूहुल अमीन :

दम्माल ख़ाने की उत्तरी दीवार में एक वसीअ दालान है इसके दोनो सिरों पर एक एक कोठरी है इस दालान को मदरसए रूहुल अमीन कहते हैं।

उत्तरी आलमगीरी फाटक :

मदरसए रूहुल अमीन से मिला हुआ उत्तरी दीवार में एक अति विशाल गेट है इस पर चार मीनारें हैं इसकी शोभा देखने से बनती है इस पर धम्माल की तरफ़ भीतर की ओर निम्न क़ता लिखा हुआ है।

शाह शाहा नस्त ज़िन्दा शाह मदार
शाह माया नस्त ज़िन्दा शाह मदार
क़ासिमे नेअमाते इरफ़ाने अली
नूरे यज़दाँ नस्त ज़िन्दा शाह मदार
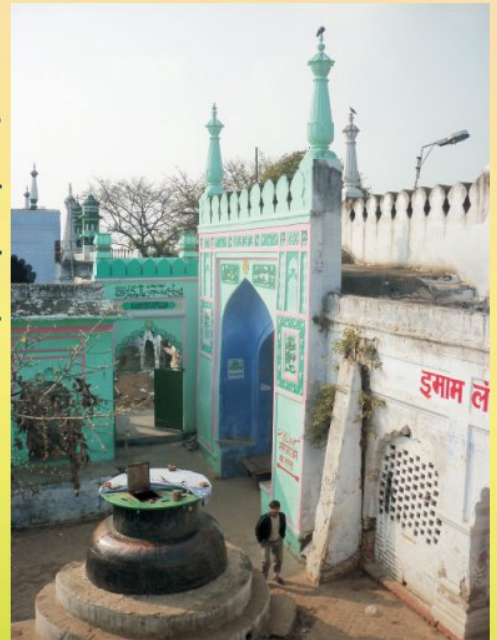
ऊपर चढ़ने हेतु इसमें सीढ़ियाँ लगी हुयी हैं परन्तु इस समय बन्द हैं। इस फाटक के बाहर बादशाही कुआ क़ब्र रूहुल आज़म मियाँ और इसके बाद बस्ती। यह फाटक आस्ताने शरीफ़ के फाटकों में तीसरा फाटक है ।

बारह दरी या नक्क़ार ख़ाना :

फाटक के पश्चिमी छोर पर एक और दालान है इसके सामने पाँचवें और छठे हरम को अलग करने वाली लम्बी सी दीवार है दीवार के उत्तरी दक्षिणी कोनों पर छटे हरम में आने जाने के लिए दो दरवाज़े हैं पाँचवे हरम की दक्षिणी दीवार में हरम के जवाब में फाटक व दालान सीढ़ियाँ इत्यादि उसी प्रकार बनी हुयी हैं। उत्तरी फाटक से दक्षिणी फाटक तक एक अति लम्बा दालान

इसमें तीन दिशाओं में 25 दर हैं इसका निर्माण राजा भागमती सलीन दरबार अवध ने कराया था दक्षिणी दीवार वाला फाटक आस्ताने शरीफ़ के अन्य पॉच फाटकों में चौथा है।

दम्माल शरीफ़/बारह दरी

नक्क़ारा

दक्षिणी फाटक ने पूर्वी सिरे पर बने दालान में मिश्रित धातु का घण्टा है तथा इसी के कोने में एक अतिप्राचीन नक्क़ारा रखा हुआ है

नक्क़ारा

छटा हरम

मस्जिदे आलमगीर-

मस्जिदे आलमगीर जिसमें लगभग पॉच हज़ार लोग एक साथ नमाज़ अदा कर सकते हैं लाल पत्थर की बनी इस ख़ूबसूरत मस्जिद की दक्षिणी एवं उत्तरी दीवारों में सुदृढ़ एवं सुन्दर दालान हुजरों सहित बने हुए हैं दक्षिणी दालान के हुजरे में मोअज़्ज़िन रहता है इसमें पॉच अति विशाल दर हैं नवीन निर्माण हुआ है और उसके आगे टिन पड़े हुए हैं मस्जिद की छत का निर्माण पॉच गोल डाटों से किया गया है मध्य डाट पर एक अत्यन्त विशाल सुन्दर एवं सुदृढ़ गुम्बद बना हुआ है इस समय गुम्बद के लम्बे ख़ूबसूरत कलस पर अज़ान हेतु दो बड़े लाउड लगे हुए हैं गुम्बद के चारो तरफ़ मीनारें बनी हुयी हैं पहले इसम हौज़ था जिसे अब हटा दिया गया है । दक्षिणी सिरे पर टंकी नुमा मीनार अज़ान देने के लिए बना हुआ है इसका निर्माण शाह बनी पनाह मदारी ने कराया था मस्जिद में आने जाने के लिये चार दर्वाज़े हैं एक सामने दो आस पास और चौथा एक हुजरे में है जो बाहर खुलता है । यह दरवाज़ा आस्ताने की सीमा का चौथा अन्तिम दरवाज़ा है।

मस्जिदे आलमगीर

मुसाफ़िर ख़ाना

मुसाफ़िर ख़ाने में लगभग हर प्रकार की सुविधा प्रशासन की तरफ़ से की जाती है इसमें लगभग 5–6 हज़ार लोग एक साथ रह सकते है मुसाफ़िर ख़ाने में इस समय नवीन निर्माण कार्य चल रहा है ।

सातवॉं हरम

अन्तिम फाटक

पहले लिखा जा चुका है कि जन्नती दर्वाज़े की निकास सातवें हरम में है इससे निकलते ही एक शिकस्ता मस्जिद है हरम हफ़तुम यानी सातवॉं हरम पहले की दक्षिणी दीवार से मिला हुआ है ये दक्षिणी तथा पूर्वी दो दीवारों पर ही सीमित है इसकी पूर्वी दीवार में छोटा फाटक लगा हुआ है यह आस्ताने शरीफ़ के अन्य पॉंच फाटकों में पॉंचवॉं अन्तिम फाटक है इस पर दो मंज़िला महमान ख़ाना नवीन निर्माण हुआ है इसके अतिरिक्त इस हरम में अनेक क़ब्रें हैं उसके सिवा कोई उल्लेखनीय चीज़ नहीं है आस्ताने शरीफ़ के बाहर मक़बरे और क़ब्रों ने मकनपुर की शोभा में चार चॉंद लगा रखे हैं।

बाबा लाड का मक़बरा

आस्ताने शरीफ़ की दक्षिणी दीवार के बाहर फाटक पुश्त ख़ाना से पॉचवें हरम के फाटक तक असंख्य मज़ारें हैं पुश्त ख़ाना के समीप बाबा लाड दरबारी का मक़बरा हैं .

फाटक पुश्त ख़ाना

इसके भी समीप में नये निर्माण हुए हैं जिसमें बाबा लाड रह० के मक़बरे पर बरामदा और दूसरे मज़ारात पर चहार दीवारी गेट आदि। .

जिनको चहार दीवारी से घेरा गया है उस अहाते में कमण्डी शाह जैसे महान संत अपनी समाधि में विश्राम कर रहे हैं। .

आस्ताना हज़रत मुहम्मद अरगून

आस्ताने मुहम्मद रह० के समीप ही क़ाज़ी लहरी दादा अली शेर रह० का मक़बरा है और इस से मिला हुआ अल्हाज मुहमद नबी हसन रह० का आस्ताना है इन सब का अपने स्थान पर बडा महत्व है । आस्ताने मुहम्मद अरगून रह० के सामने जो जगह पड़ी हुई है इसे "दादा का पेट" कहते हैं । उर्स शरीफ़ के मौक़े पर मलंगाने किराम यहॉ पर भी श़ग्ले धम्माल करते हैं । .
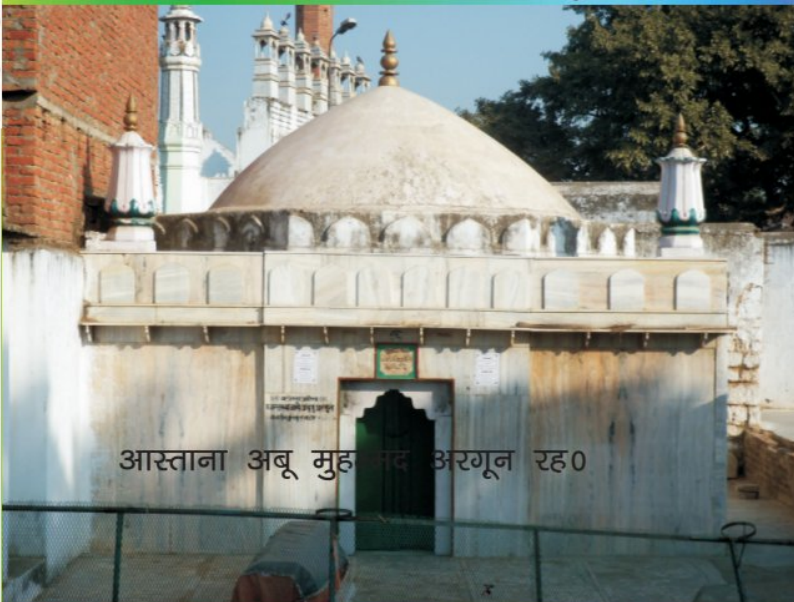
आस्ताना ह० अबुल हसन तैफ़ूर व अबूतुराब फ़न्सूर

दरगाह हज़रत ज़िन्दा शाह मदार रज़ी० के दक्षिण में कोई २० क़दम की दूरी पर हज़रत ख़्वाजा अबुल हसन तैफ़ूर तथा हज़रत ख़्वाजा अबूतुराब फ़न्सूर रह० का आस्ताना है इसपर पत्थर का काम मकराने वाली अम्मा ने कराया है।

आस्ताना शरीफ़ ह0 फ़न्सूर व तैफ़ूर रह0

संगम

यह विश्व प्रसिद्ध क़स्बा अपने अन्दर अनन्त विषेशतायें छुपाये हुए है यहाँ प्रत्येक धर्म जाति के लोग वास करते हैं परन्तु यह पहचानना अत्यन्त कठिन है कि कौन व्यक्ति किस जाति अथवा धर्म से सम्बन्धित है क्यों कि यहाँ आम व ख़ास शुद्ध उर्दू ही बोलते हैं तथा इतने अधिक घुले मिले रहते हैं कि संसार में इनकी अलग पहचान बनी हुई है मकनपुर प्रत्येक धर्म जाति का संगम है। काँधे से काँधा मिला कर चलना,दुःख सुख में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेना इनका गौरव है छुआ छूत भेद भाव नाम मात्र नहीं है। 70 प्रतिशत मुस्लिम तथा 30 प्रतिशत अन्य जातियाँ वास करती हैं। हर जाति के लोग अलग-अलग मुहल्लों में रहते हैं।

मुहल्ले

इस सुन्दर क़स्बे में लगभग 72 मुहल्ले हैं। प्रमुख क़िला, पहाड़िया, सराय, रौशन पुरा, तोपची, नीमतला, इमली तला, इमलिया बाग़, पक्का बाग़, सैयद बाड़ा, मण्डयी, क़सौरा, चमरौदा, बेड़ा, दानिश मुहाल आदि।

मस्जिदें

क़स्बे में 102 मस्जिदें हैं अधिकतर शहीद हो गयीं जो आबाद हैं उनमें प्रमुख ये हैं आलमगीरी, अधियाकों, चौथियाकों, नटकी, दहाड़िन की, क़सौरे वाली, दारोग़ा वाली, राजों वाली, करबला वाली, हवेली वाली दारोग़ा वाली, रीठे वाली, तोपची वाली, बेड़े वाली, आदि .

कुएं

200 से अधिक कुए हैं अधिकतर बन्द हो चुके हैं जिनमें प्रमुख बाद शाही कुआ, दल थम्मन, जम्मन जत्ती, शकर कुआ, ज्योति कुआ आदि।
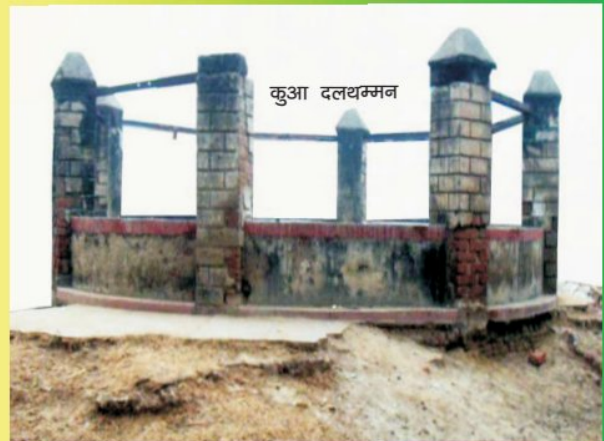
कोठी

यहाँ तीन अंग्रेज़ भाई मेक्स वेल ब्रादर्स रहते थे जिनकी कोठी बनाम नील की फ़ैक्टी थी ये नील का व्यापार करते थे अब कोठी के स्थान पर बस्ती बस गयी है कोठी के बचे खुचे निशानात भी लुप्त हो गये हैं।

चिकना महल

लखौरी ईंटो का बना यह महल जिसको उर्द की दाल से जोड़ा गया था इसकी शेष दीवारें अपने निर्माता की याद को दोहरा रही हैं इसकी दीवारों में सुई तक क्षीण नहीं है इसकी खुली दीवारें इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। .
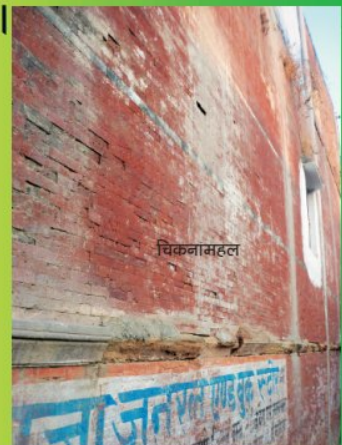
हवेली

प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम 1857 ई० के प्रमुख सेनानी ख़ाने आलम मियाँ की हवेली जिसे स्वतन्त्रता संग्राम विफ़ल होने पर गोरी सरकार ने जब्त करके नीलाम कर दिया था जिसके बचे खुचे खण्हर भी लुप्त हो गये परन्तु वह मस्जिद जिसमें हवेली की स्त्रियाँ नमाज़ अदा करती थीं आज भी मौजूद है यह मस्जिद मेला तहसील से सटी हुई है हवेली के स्थान पर क़स्बे का मेन बाज़ार, कन्या पाठशाला, पशु चिकित्सालय,मेला तहसील आदि के भवन निर्मित हैं।
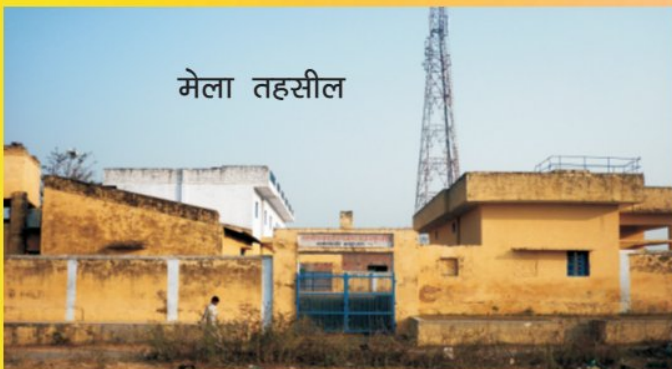
मेला तहसील

इस भवन का उपयोग मेला बसन्त के के समय ही किया जाता है इसके अतिरिक्त यह भवन रिक्त पड़ा रहता है। मेले के समय बिल्हौर तहसील का कुछ अंष इसमें स्थानान्त्रित कर दिया जाता है मेले में आई लाखों की भीड़ को नियन्त्रित रखने में इसका बड़ा योगदान रहता है।

गेस्ट हाउस

इस भवन का उपयोग भी मेले के अवसर पर ही होता है वैसे भी जब बड़े अधिकारी आते हैं तो इसी भवन में ठहराये जाते हैं इसके अतिरिक्त ये भवन भी वर्ष भर रिक्त रहता है अलबत्ता इसकी देख रेख के लिये मेला कमेटी की ओर से एक चौकी दार बना रहता है।

मदारिस व स्कूल

मकनपुर शरीफ़ में छोटे बड़े लगभग सात मदरसे हैं जिन में जामिया अरबिया मदारुल उलूम मदीनतुल औलिया जो ख़ानक़ाहे आलिया के दक्षिण में है और जामिया गुलज़ारे दानिश ओरेन्टियल स्कूल जो मदार गेट के क़रीब दक्षिण में है जिनका अपना विशेष महत्व है। इसके अतिरिक्त छोटे बड़े लगभग आठ विद्यालय हैं।

अस्पताल

पी०एच०सी० अस्पताल ह० ज़िन्दाशाहमदार रज़ी० के आस ताने शरीफ़ के दक्षिणी कोने पर है ये अस्पताल इतने बड़े क़स्बे के लिये पर्याप्त नहीं है और कोई विशेष सुविधा भी प्रतीत नहीं होती।

टंकी

हमारे ठेकेदार ने जो पाइप लगाये हैं शायद वह इस अवस्था में नहीं हैं कि पानी की सप्लाई की जासके शायद इसी लिये ये मात्र एक ठूँठ बनी वर्षों से खड़ी लोगों को मुँह चिड़ा रही है।
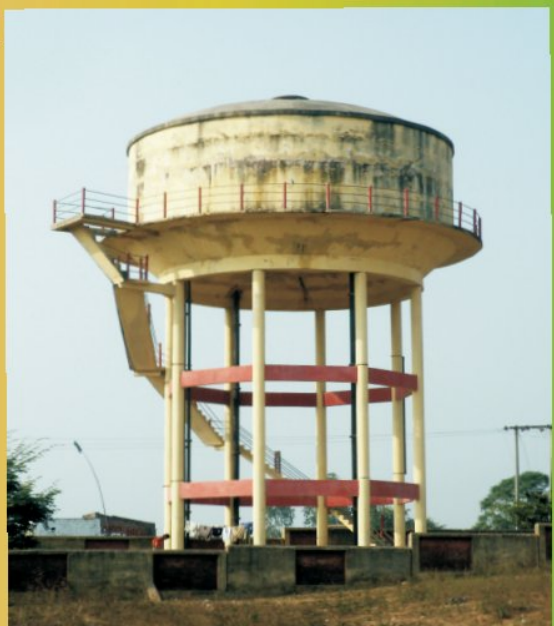
स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों की समाधियाँ

ये वह समाधियाँ हैं जिन्हें पंचायत में देकर इनकी मिट्टी पलीद कर दी गयी हैं यहाँ आज़ादी के 26 दीवाने दफ़न हैं।

गढ़ी मजनूँ शाह

गढ़ी मजनूँशाह

अपनी मात्र भूमि की रक्षा करते हुए 26 दिसम्बर 1787 ई० को प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के प्रमुख सेनानी शहीद होने वाले बाबा मजनूँ शाह की समाधि जिसकी हालत भी कुछ ठीक नहीं है।

मक़बरा

गद्दी मक़बरा

मकनपुर शरीफ़ में लगभग दो दर्जन से अधिक मकबरे हैं जिसने क़स्बे की सुन्दरता में चार चाँद लगा दिये हैं। यूँ तो प्रत्येक मक़बरा किसी न किसी अध्यात्मिक संत से साम्बद्ध है परन्तु कुछ मक़बरे ऐसे भी हैं जिनका सम्बन्ध गद्दी,तकिये और पटटियों आदि से सम्बन्ध रखते हैं ये मक़बरा भी तकिया है जिसमें कई बीघा खेती लगी हुई है। ये भी अपने में अधितिये है।

ईसन नदी

ईसन व मदार ब्रिज
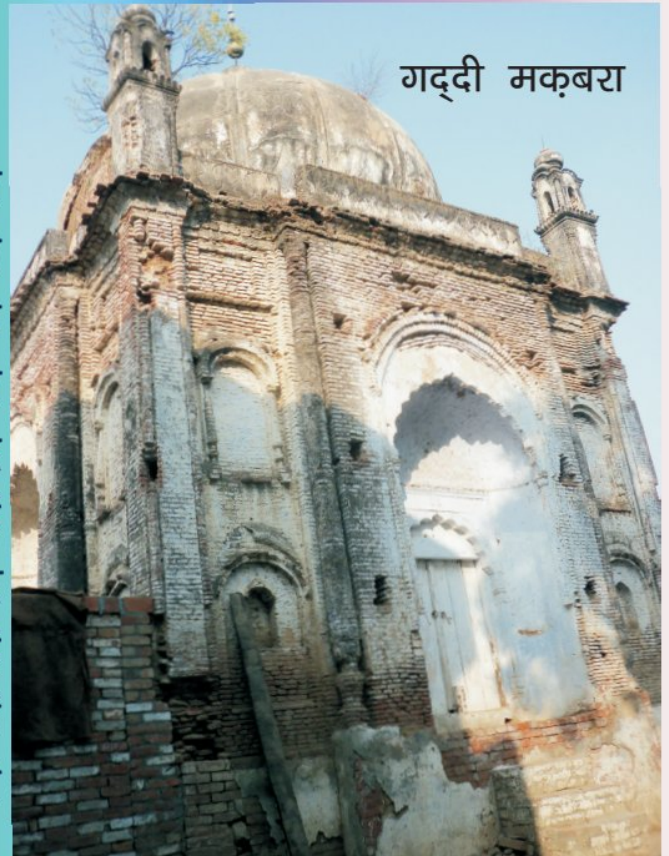
ईसन जिसका शुद्ध यासीन है चूँ कि हज़रत ज़िन्दा शाह मदार रज़ी० ने हज़रते यासीन रह०को जब पानी का अकाल पड़ा तो अपनी छड़ी देकर यह आदेश दिया कि पूर्व से पश्चिम की ओर एक लकीर खींच दीजिये हज़रत यासीन ने जैसे ही रेखा खींची कि पानी उबल पड़ा और दोनो ओर फैल गया जिसे मुग़ल दौर में मैंनपुरी झील से पश्चिम में और गंगा से पूर्व में मिला दिया गया इन्हीं के नाम पर पहले इस नदी का नाम यासीन और अंग्रेज़ी शासनकाल में ईसन हो गया।

मदार सेतु

अकबर बादशाह के शासन काल में ईसन पर पुल का निर्माण किया गया था जो सराय घाट पर था और क़न्नौज को जोड़ता था इसके जर्जर हो जाने पर बाद शाह जहाँगीर ने इसकी मरम्मत कराई थी। जिसके चिन्ह आज भी मिलते हैं कतबा मय तारीख़ के शोरूम में महफ़ूज़ है। उत्तर प्रदेश राज्य सेतु निगम की ओर से 1985 ई० में इसका निर्माण हुआ अरौल-मकनपुर रोड पर बना ये पुल रसूलाबाद आदि को जोड़ता है।

मदार गेट

मकनपुर शरीफ़ में प्रवेश के लिये सर्व प्रथम मदार गेट अथवा प्रवेश द्वार पर जाना होगा इसे 2006ई० में मेला कमेटी के धन से निर्मित किया गया है।

यह मुख्य प्रवेश द्वार भी अपनी पहचान आप है।

रेलवे स्टेशन

मकनपुर शरीफ़ से लगभग पॉंच कि०मी० उत्तर में अरौल मकनपुर नाम से यह स्टेशन जनपद कानपुर से पश्चिम की ओर 75 कि०मी० तथा जनपद फ़रुख़ाबाद से पूर्व की ओर 75 कि०मी० एवं क़न्नौज और बिल्हौर के मध्य स्थित है।

नक़्शा मकनपुर शरीफ़
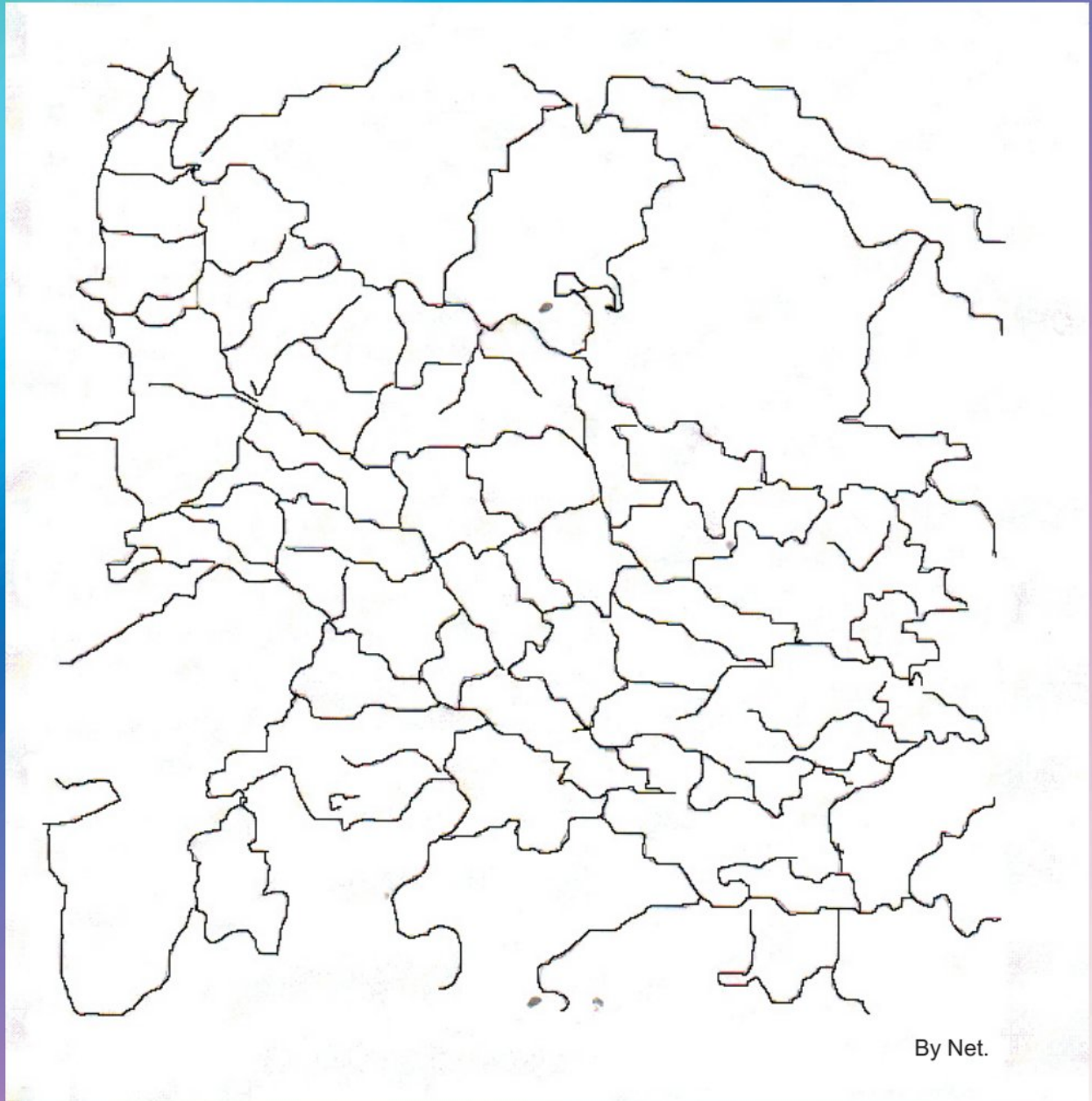
प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम और मकनपुर शरीफ़

इस समय जबकि हम अपनी स्वाधीनता की पचासवीं वर्ष गाँठ मना रहे हैं उन बलिदानों का स्मरण कर रहे हैं जो हमारे पूर्वजों ने इस देश को अंग्रेज़ों की पराधीनता से स्वतन्त्र कराने के लिये दी थीं। जो इतिहास का स्वर्णिम अध्याय है परन्तु खेद इस बात का है कि जिन बलिदानियों ने वास्तव में अपने देश के लिये अपने को समर्पित कर दिया सीनों पर गोलियाँ खायीं हँसते हँसते फाँसी के फनदों को अपने गलों में डाल लिया अपना तन मन धन सब न्योछावर कर दिया उनको लोभी राजनीतिज्ञों और इतिहास कारों ने विस्मृत करने का भरसक प्रयास ही नहीं किया बल्कि इनके बलिदान को ग़लत तरीक़े से पेश करके ग़द्दारों की पंक्ति में लाकर खड़ा कर दिया और जो लोग इस त्याग से अनभिज्ञ थे यहाँ तक कि जो चोरी डकैती गुण्डा गर्दी करते हुए पकड़े गये और कारागारों में डाल दिये गये उनको देश भक्त और स्वतन्त्रता सेनानी की पदवियों से विभूषित किया गया।

मगर इतिहास कभी नहीं मरता। आईये ! इतिहास के ऐसे ही पृश्ठो को खोलते हैं जिनको जानबूझ कर छुपाने का प्रयास किया गया है और भारतीय इतिहास कि पुस्तकों से दूर रखा गया है। मैं आभारी हूँ साप्ताहिक नई दुनिया दिल्ली 16–22 अगस्त 1994 ई० का और उ०प्र० नेशनल चैनल का जिन्हों ने जाग उठा किसान और मजनूं शाह जैसे सीरियल दिखाकर जनता को यह सोचने पर विवश कर दिया कि 1857 ई० की क्रान्ति ही महान भारत की क्रान्ति नहीं है बल्कि इस ग़दर से पूर्व 1963 ई० में ही अंग्रेज़ो के शासन के ख़िलाफ़ स्वतन्त्रता की आग भड़क उठी थी।

हिस्टी ऑफ़ द फ़्रीडम मूवमेंट ऑफ़ इण्डिया वैल्यूम टोटा टारचर्ड 1967ई० एडीशन घोश जे०एम० संयासी एण्ड फ़क़ीरैन बंगाल कलकत्ता 1930 पेज 10 इत्यादि के अछूते पृष्ठ टटोलने से पता चलता है कि निर्दयी अंग्रेज़ों के शासन के विरोध में सबसे पहले बाबा मजनूँ शाह ने आन्दोलन का पताका पहराया था। जो सिलसिलय ज़िन्दा शाह मदार के सुप्रसिद्ध गिरोह मलंगान से साम्बद्ध थे और भारत के एक बड़े भाग बंगाल उड़ीसा और बिहार के मुसल्मानों के अध्यात्मिक गुरू थे जिनसे हिन्दू भी अत्यधिक आस्था रखते थे।

आगे चलकर इस आन्दोलन में बाबा भवानी पाठक ने इनका भर पूर सहयोग किया जो साइबा पंथ के संयासियों के महा गुरू थे। इस संस्था के सबसे बड़े नेता तो बाबा मजनूँ शाह थे परन्तु उनके उत्तराधिकारी मूसा शाह मदारी, चिराग़ अली शाह मदारी, नूरुल मुहम्मद मदारी, रम्ज़ानी शाह मदारी, ज़हूर शाह मदारी,सुब्हान अली शाह मदारी,उमूमी शाह मदारी, नेकू शाह मदारी, बुद्धू शाह मदारी, इमाम शाह मदारी, फ़रग़ल शाह मदारी, मुती उल्लाह मदारी, मेमन सिंह, भवानी पाठक, देवी चौघरानी, कृपा नाथ,पीताम्बर आदि ने40–45 वर्ष तक इस तहरीके आज़ादी को चलाया। .

ये फ़क़ीर और संयासी गॉव गॉव जाकर लोगों को अंग्रेज़ो के विरोध में उकसाते थे। मजनूँ शाह एक ऐसे क्रान्ति कारी थे जो कठिन समय में अपने और बुद्धि के प्रयोग से लोगो चकित कर देते थे। उन्हों ने मैक्नीज़ी के अधिनस्थ फ़ौज को निरन्तर हानि पहुॅचाई और 1722 ई० में निर्णायक परास्त किया। 1769 ई० में कमाण्डर कैथ की फ़ौज को परास्त ही नहीं किया बल्कि उसका सर भी क़लम कर लिया। .

1771 ई० में मजनूँ शाह ने अपने मस्तान गढ़ के क़िले में मोर्चा बन्दी करके लेफ़टीनेन्ट टेलर की फ़ौज के छक्के छुड़ा दिये और बाहर निकल गये जहॉ किसानों और दस्त कारों का एक बड़ा लश्कर आपके साथ हो गया वजह यह थी कि दस्त कारों और किसानों को अपना समस्त माल अंग्रेज़ सौदागरों के हाथ बेचना पड़ता था वह भी ईस्ट इण्डिया कम्पनी के तय किये हुए दामों पर और जब किसान अच्छे दामों किसी और के हाथ माल बेचता हुआ पकड़ा जाता तो उसे चाबुकों से मार मार कर जेल में डाल दिया जाता था अतः किसान और दस्त कार मजनूँ शाह के युद्ध समर मे सम्मिलित हो गये। आपने नाटूर की रानी भवानी को भी सम्मिलित होने के लिये न्योता दिया परन्तु रानी भवानी ने सहयोग करने से मना कर दिया फिर भी आप हताश नहीं हुए और देश के लिये युद्ध जारी रखा अल्प साधनों के होते हुए भी 14 नवम्बर 1776 ई० को फ़िरंगियों को एक और लज्जातमक हार का सामना करना पड़ा जिसमें लेफ़टीनेन्ट राबर्टसन गम्भीर रूप से घायल हुआ। इसी समय अंग्रेज़ों ने फ़क़ीरों और संयासियों के मध्य धार्मिक कटठरता की हवा देकर फूट डाल दी। जिसके परिणाम सवरूप बंकिम चन्द्र चटर्जी का

नाविल आनन्द मठ सामने आया इसका भयानक रूप ये है कि इस नाविल में आज़ादी के इस दीवाने मजनूँ शाह और उनके साथियों को देश द्रोही बताकर अंग्रेज़ों से प्रेम और मुसल्मानों से घृणा का प्रदर्शन किया गया है। यहाँ तक कि रूदे कौसर के लेखक शेख़ मु० इकराम भी उपरोक्त नाविल के भ्रमित लेख में उलझ कर गुमराह हो गये।

भ्रान्तियाँ इतनी उत्पन्न हुयीं कि बाबा मजनूँ शाह की योजनायें विफ़ल होने लगीं और अधिक कठिनाइयाँ उत्पन्न होने लगीं यहाँ तक कि उनको उपनों से भी भय लगने लगा देश वासियों की इन भ्रान्तियों को समाप्त करने और एकता को सुदृण करने के लिये मजनूँ शाह ने पूरे उत्तरी बंगाल पुर्निया से जमाल पुर तक का भ्रमण किया और नये सिरे से बलिदानी जत्थों का गठन किया और छापा मार तरीक़े को उचित समझा। अचानक किसी क्षेत्र में प्रकट होते ओर फ़िरंगियों पर टूट पड़ते।1786ई० ज़िला बागौरा के एक गाँव मोंगरा में अचानक प्रकट हुए और लेफ़टीनेन्ट बरीनान की फ़ौज पर इतना ज़बरदस्त आक्रमण किया कि कि अंग्रेज़ी फ़ौज के पाँव उखड़ गये और इसी जंग में मजनूँ शाह गम्भीर रूप से घायल हो गये और ज़ख़्मों से चूर मकनपुर शरीफ़ चले आये और अपने तकिये जिसे गढ़ी कहते थे ठहरे मगर ऐसी परिस्थिति में भी मजनूँ शाह को मकनपुर षरीफ़ में आबाद अंग्रेज़ों का वुजूद फूटी ऑंखो नहीं भाया और उनहों ने मैक्स वेल ब्रादर्स के एक भाई पीटर मेक्स वेल को नरक भेज दिया। जब ये समाचार अंग्रेज़ शासन को मिला तो उसके सिपाहियों ने हज़रत रूहुल आज़म मियाँ जाफ़री, हज़रत नत्था मियाँ जाफ़री और उनके साथियों को पंक्ति में खड़ा करके गोलियों से भून दिया हज़रत बाँगी मियाँ जाफ़री और उनके साथियों को काले पानी की सज़ा देकर अण्डमान भेज दिया और मजनूँ शाह 26 दिसम्बर 1787 ई० में अपने रब से जा मिले । मजनूँ शाह को प्रमुख सेनानी हज़रत ख़ाने आलम मियाँ जाफ़री का सानिध्य प्राप्त था जो 36 मवाज़ेआत के ज़मींदार थे उनकी हवेलियों और क़िले में किसी बड़े बादशाह का जैसा निज़ाम था हाथी घोड़े सैकड़ों नौकर थे हर समय चहल पहल बनी रहती थी चूँ कि इस फ़ौजी एक्शन के समय ख़ाने आलम मियाँ जाफ़री अपने घनिष्ट मित्र पेशवा बाजी राव बिठूर के यहाँ महमान थे इसलिये उनका नुक़सान कम हुआ। पेशवा बाजी राव अपने इस पुरोहित मित्र

के द्वारा दरगाह शरीफ़ पर दुआएं मॉगने के लिये गाहे ब गाहे मकनपुर शरीफ़ आया करते थे।

1787 ई० में मजनूँ शाह तो इस दुनिया से कूच कर गये परन्तु उनकी मुहिम जीवित रही। उधर मूसा शाह मलंग, देवी चौधरानी, चिराग़ अली शाह मलंग आदि ने फ़िरंगियों पर हमले तेज़ कर दिये। इधर ख़ाने आलम मियॉं जाफ़री और पेशवा बाजी राव के मध्य होने वाले पत्र व्यवहार की सूचना गोरी सरकार को प्राप्त हो गयी ये ग़द्दारी तज़ीम उद्दीन, छेदा मेमार, आज़म मेमार और झब्बू ग़ुलाम आदि ने अपने निजि स्वार्थ के लिये की थी और अंग्रेज़ों से जिसका पारितोषिक भी प्राप्त किया। अलग़रज़ 1817 ई० में अंग्रेज़ फ़ौज ने ख़ाने आलम मियॉं जाफ़री की हवेलियों का घिराव करके आप के घर के 26 लोगों को हथनी इमली पर फॉसी देदी इस अचानक के हमले से ख़ाने आलम मियॉं जाफ़री ज़ख़्मी हो गये और अपनी तेज़ रौव घोड़ी पर सवार होकर सर्व प्रथम पेशवा बाजी राव के पास फिर रातों रात गुड़गॉव इलाक़ा अलवर पहुँचे जहॉं वह शहीद हो गये।

सैयद ख़ाने आलम मियॉं जाफ़री की मज़ार गुड़गॉव में आज भी मौजूद है। स्त्रियों और तीन नाबालिग़ बच्चो के अतिरिक्त घराने में किसी को नहीं छोड़ा इनमें आपके दो बेटे इनाम रसूल जाफ़री 8 वर्ष, अताये रसूल जाफ़री 6 वर्ष के जो फ़िरंगियों के हमले के समय अपने क़िले में थे इस लिये बच गये और तीसरे फ़िदाये रसूल जाफ़री जिनकी आयु लगभग 10 वर्ष की होगी एक वफ़ादार हिन्दू नौकर इनको लेकर भागने में सफ़ल हो गया और इस सामूहिक रक्तपात से बचकर लम्बी यात्रा तय करके कलकत्ता पहुँचे रास्ते में हिन्दू नौकर का देहान्त हो गया फ़िदाये रसूल जाफ़री भी उसके सीने पर सर रख कर रोते रोते मूर्छित हो गये। किसी सज्जन ने इनको कलकत्ता के सिविल अस्पताल में भर्ती कर दिया यहॉं डाक्टर क्लाक पाइन जो सिविल अस्पताल कलकत्ता के सिविल सार्जन थे निसन्तान थे इन को अपने घर उठा ले गये इनकी शिक्षा दीक्षा और खाने पीने हेतु दो मुसलमान मीर शाकिर अली और मीर करम अली को नियुक्त कर दिया। 1839 ई० में डाक्टर क्लाक पाइन का देहान्त हो गया हज़रत फ़िदाये रसूल जाफ़री सब कुछ उनकी बेगम को सौंप कर लखनउ चले आये यहॉं नसीर उद्दीन हैदर शासक

थे उनके अति निवेदन पर आपने किताब मुफ़ीदुल अजसाम लिखी जो यूनान में आज भी चलती है और जिसमें उन्हों नें उपरोक्त हालात का वर्णन किया है कुछ समय लखनऊ में ठहरने के उपरान्त आप मकनपुर शरीफ़ चले आये इधर आपकी वालिदा जिन्हें अम्मा कहा जाता था अंग्रेज़ों से जंग करने के लिये लोगों में पैसा बॉटतीं और लोगों को अंग्रेज़ों से जंग के लिये आमादा करती रहीं। .

1857 ई० में हकीम सैयद फ़िदाय रसूल जाफ़री अपने परिवार की क़त्लो ग़ारत गरी का बदला लेने के लिये नाना साहब बिठूर के साथ हो लिये और अंग्रेज़ों की सारी फ़ौज को कानपुर से खदेड़ दिया जब जनरल हयूलॉक ने नाना साहब को नेपाल भेज दिया तो आप नासिक चले गये जहॉ आपने जिन्दा शाह मदार रज़ी० के चिल्ले शरीफ़ पर शरण ली और वहॉ के फ़क़ीरों को अंग्रेज़ों के खिलाफ़ भड़काया फ़क़ीरों को एकत्रित करने के उपरान्त आप मकनपुर शरीफ़ चले आये । .

मजनूँ शाह की गढ़ी हो या बुद्धू तकिया अंग्रेज़ों की कोठी हो या ख़ाने आलम मियॉ की हवेलियॉ और क़िला हालाते ज़माना के थपेड़े बर्दाश्त न कर सके आज कुछ चिन्ह शेष हैं जैसे 26 शहीदों की समाधियॉ जिनमें अधिक तर को खोद कर नष्ट कर दिया गया ये हवेली में ही थीं जो अब मवेशी अस्पताल के समीप हैं हवेली के स्थान पर मकनपुर का सद्र बाज़ार,मवेशी अस्पताल, कन्या विद्यालय, पंचायत भवन, दुकानें, मेला तहसील आदि मेला तहसील से मिली हुयी वह मस्जिद अभी सुरक्षित है जिसमें हवेली की स्त्रियॉ नमाज़ अदा करती थीं। मकनपुर शरीफ़ के कुछ नाम निहाद राजनीतिज्ञों ने जानबूझ कर इस धरोहर को पंचायत में देकर इन शहीदों की निशानियों की मिट्टी ख़राब कर दी है। अफ़सोस कि प्राइमरी एजूकेशन के इतिहास में स्वतन्त्रता की इस महान क्रान्ति को एक वाक्य में ही समेट दिया गया है।आज के इतिहासकार भी पूरा क्रेडिट अपने रिश्तेदारों आदि को ही देना चाहिते हैं। खुदा जाने इन्हें मदारियों, मदारी फ़क़ीरों, सिलसिलये आलिया मदारिया से सामबद्ध आज़ादी के इन दीवानों से कौन सी दुश्मनी है जो इनका नाम आते ही भड़क उठते हैं। .

संक्षिप्त परिचय
हज़रत ज़िन्दा शाह मदार

इस से पूर्व कि हज़रत बदी उद्दीन अहमद ज़िन्दा शाह मदार के जीवन दर्शन पर प्रकाश डाला जाए शब्द ''मदार'' का परिचय अति आवश्यक है।

मदार

''मदार'' अर्बी भाषा का शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ है ''धुरी'' परिक्रमा का स्थान '' अर्थात जिस पर सम्पूर्ण सृष्टि आश्रित अथवा आधीन है।''

'' मदार वह है कि इसी से सन्तोष है सृष्टि को'' तथा''मदार पूर्ण सृष्टि अथवा ब्रहम्माण्ड का संचालक है।''

मुहम्मद रसूल सल्ल०

''मदार वह है कि इसको गर्व है अल्लाह पर और अपने अधित्ये होने पर''

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक

मदार अन्तर ज्ञान एवं सृष्टि अथवा ब्रहमाण्ड का रक्षक है तथा जो मदार के अधीन है मदार उदार है तथा सुन्दरता से परिपूर्ण है तथा शोभनीय है।

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ी०

''समस्त वस्तुयें मदार के आधीन हैं''

हज़रत उसमान ग़नी रज़ी०

''मदार प्रत्यक्ष है रहस्य का तथा देवस्य स्तर से परवर दिगार तक ले जाता है''

हज़रत अली अलै०

''मदार नबूवत तथा विलायत के मध्य एक श्रेणी है''

हज़रत ज़हीर उद्दीन इलियास

'' सम्पूर्ण सृष्टि कुतबुल मदार के आधीन होती है और कुतबुल मदार ही पूर्ण सृष्टि प्रचालक होता है''

दाता गंज बख़्श

.कुतबुल मदार के अस्तित्व के कारण अल्लाह सम्पूर्ण सृष्टि को प्रलय से सुरक्षित रखता है।

शेख़ अकबर

सर्व विदित हो कि पदानुसार अल्लाह के पश्चात नबूवत का तथा इसके पश्चात जिस चीज़ को मौलिक महत्व प्राप्त है वह कुतबुल मदार को है।

जन्म स्थली का ऐतिहासिक परिवेश

शाम

इसे सीरिया कहते हैं ये अरब का पड़ोसी देश है अरब टापू की भाँति है जिसके तीन तरफ़ पानी तथा एक ओर धरातल है पश्चिम में सागर कुलिज़्म, स्वेज़ सागर और रूम का सागर है पूर्व में हिन्द महा सागर फ़ारस की खाड़ी अम्मान सागर है दक्षिण में हिन्द महा सागर है और उत्तर की सीमा ईराक़ और सीरिया से जुड़ी हुई हैं अहमर सागर के किनारे किनारे शाम की सरहद से यमन तक का जो हिस्सा है उसे हुज्जाज़ के नाम से याद किया जाता है मदीना मक्का तायफ़ इसी हुज्जाज़ के शहर हैं।

हलब

शाम सीरिया में हलब का वह मक़ाम है जो हिन्दुस्तान में कश्मीर और हैदराबाद का है अर्बी में हलब का अर्थ दूध दूहने के हैं कहते हैं कि एक बार हज़रत इब्राहीम अलै० ने यहाँ के एक टीले पर अपनी बकरियों का दूध दुहा था इसलिये इस जगह का नाम हलब पड़ा।

चिनार

इस समय शाम से लगभग 30 कि०मी० नील नदी के समीप प्रकृति सौन्दर्य से ओत प्रोत कस्बा चिनार है प्राचीन काल में यहाँ ईरानियों का एक जत्था रुका था जिन्हों ने अपने साथ लाये हुए चिनार के पौधे लगाये थे इस लिये इस जगह का नाम चिनार पड़ा यही वह पावन स्थली है जहाँ हज़रत ज़िन्दा शाह मदार रज़ि० का जन्म हुआ था।

ख़ानदान

शहर हलब में उमवी ख़ानदान का निष्कासित और उनके अत्याचार का शिकार एक परिवार था जो मदीने से प्रस्थान करके यहाँ आबाद हुआ था इस परिवार में सैयद बहा उद्दीन रज़ी० के चार सुपुत्र सैयद अहमद,सैयद मुहामिद,सैयद महमूद और सैयद अली हलबी मौजूद थे।

सैयद अली हलबी

हज़रत सैयद क़िदवत उद्दीन अली हलबी पंज शम्बा 17 रजब 219 हिजरी मदीने में प्रातः दुनिया में अवतरित हुए ये मुहम्मद सल्ल० की सुपुत्री हज़रत फ़ात्मा के वंश से दसवी पीढ़ी में हैं। 13 वर्ष की आयु में आपने अलौकिक ज्ञान प्राप्त करलिया 227 हिजरी में अब्बासी ख़लीफ़ा वासिक़ बिल्लाह ने आपको शाही दरबार का जज बना दिया परन्तु जब इसका भाई मुतवक्कल अलीउल्लाह 232 हिजरी में शासक हुआ तो कुछ समय बाद उसे हज़रत अली के वंशजों से घृणा हो गयी और जब इसकी दुश्मनी का रुख हलब की ओर हुआ तो हज़रत अली हलबी को भी पलायन करना पड़ा और आप पलायन करके क़स्बा चिनार पहुँचे। यह हज़रत ज़िन्दा शाह मदार रज़ी० के पिता हैं।

हाजरा तबरेज़ी

यह हज़रत जिन्दा शाह मदार रज़ी० की माता है यह तबरेज़ी परिवार से साम्बद्ध हैं इनका भी सम्बन्ध मुहम्मद सल्ल० के वंश से है यह भी तीव्र बुद्धि एवं अलौकिक ज्ञान से ओत प्रोत थीं। इनके चार पुत्र हुए ।

1.हज़रत सैयद बदी उद्दीन अहमद जिन्दा शाह मदार 242 हिजरी से 838 हिजरी तक
2.हज़रत सैयद निज़ाम उद्दीन ख़्वाजा बक्ताश वली 244 हिजरी से 277 हिजरी तक
3.हज़रत सैयद मतलूब उद्दीन क़ाज़ी महमूद उद्दीन 246 हिजरी से 296 हिजरी तक
4.हज़रत सैयद मक़सूद उद्दीन शाह बद्र उद्दीन 248 हिजरी से 311 हिजरी तक

जन्म से पूर्व के हालात

मुतवक्कल अली उल्लाह के षासन काल में जितनी भी आपदायें इसलामी हुकूमतों पर आयीं इससे पहले कभी देखने को नहीं मिलीं उदाहरण के तौर पर **232** हिजरी में ही ऐसी भयानक गर्म हवा चली जिससे खेतियाँ जल भुन कर राख हो गयीं बाज़ार और रास्ते वीरान हो गये कूफ़ा बसरा और बग़दाद आदि इसकी चपेट में थे हमदान तक इस भयानक हवा का प्रभाव रहा **240** हिजरी बिलात में एक भयानक चीख़ सुनायी दी जिसकी दहशत अनगिनत लोग मारे गये ईराक़ में भारी मात्रा में ओला गिरा जिस से खेतियाँ नश्ट हो गयीं दमिश्क़ से अनताकिया तक ऐसा खतरनाक ज़लज़ला आया कि इमारतें गिर गयीं और हज़ारों लोग दब कर मर गये फ़ारस ख़ुरासान यमन और सीरिया भी इसकी चपेट में आ गये **242** हिजरी में ट्यूनसरे ख़ुरासान नेशापुर तबरिस्तान और असफ़हान आदि में भी बहुत ख़तरनाक ज़लज़ला आया जिससे बड़े बड़े पर्वत धराशाही हो गये **242** हिजरी चुनार क़स्बे में एक सफ़ेद परिन्दा प्रकट हुआ जो तीन दिन तक दिखाई दिया वह कहता या माशरन्नास इत्तकुल्लाह इत्तकुल्लाह इत्तकुल्लाह और उड़ जाता।हज़रत क़िदवत उद्दीन अली हलबी जो आप के पिता हैं बीबी हाजरा उर्फ़ फ़ात्मा सानी जो आपकी माता हैं का विवाह २३७ हिजरी में हुआ चार वर्श तक कोई सन्तान नहीं हुयी एक रात हज़रत अली हलबी ने मुहम्मद सल्ल० को सपने में देखा कि वह कह रहे हैं कि धैर्य रखो तुम्हारे यहाँ जो बच्चा जन्में गा वह सम्पूर्ण विश्व में एक रूहानी क्रान्ति लायेगा फ़ात्मा सानी उर्फ़ बीबी हाजरा भी विचित्र सपने देखतीं कभी एक प्रकाश उन्हें घेर लेता कभी सुगन्ध आकर घेर लेती कभी पेट में प्रकाश के चक्कर लगाने का आभास होता इत्यादि।

जन्म

हज़रत ज़िन्दा शाह मदार रज़ी० का जन्म २४२ हिजरी में ईद माह की प्रथम तिथि सोमवार को पौ फूटने से पूर्व हुआ जन्म लेते ही आपने अल्लाह के एक होने तथा मुहम्मद के रसूल होने की गवाही दी इनके पिता ने जो कुछ भी घर में था सब दान कर दिया । गहवारे में बोलने वालों में आप चौथे सीान पर हैं।

नाम

मॉ बाप ने नाम अहमद रखा और हज़रत ख़िज़्र अलै० ने बदी उद्दीन कहकर पुकारा ।

उपनाम

कुतबुल मदार, कुतबुल अक़ताब, कुतबुल इरशाद, कुतबे आलम, मदारे आज़म, मदारुल आलमीन, शेख़े कबीर, शाहे ज़िन्दॉ,ज़िन्दाने सौफ़, ज़िन्दा शाह मदार, हययुल मदार, वली ज़िन्दनी, ज़िन्दा शाह वली, हयातुल वली, ज़िन्दा पीर, मदार साहब,मदार बाबा, दाता मदार, सरकारे सरकारॉ आदि। इसके अतिरिक्त आपके ६६ सिफ़ाती नाम भी हैं तथा फ़रिश्ते आकाशों पर आपको इन विशेष नामों से स्मरण करते हैं प्रथम आकाश पर ज़ैन उल्लाह दूसरे आकाश पर नज्म उल्लाह तीसरे पर मुजतमा उल्लाह चौथे पर फ़तेह उल्लाह पॉचवें पर सिफ़त उल्लाह छटे पर मुरीद उल्लाह और सातवें पर बदी उल्लाह।

बचपन

आप का बचपन आम बच्चों से बिलकुल विपरीत था एक बार बच्चों के साथ आप बकरियॉ चराने गये बच्चे खेल में व्यस्त हो गये परन्तु आप एक ओर चुपचाप खड़े उनके भविष्य पर ऑसू बहा रहे थे कि किसी ने आपसे भी खेलने के लिये कहा आपने कहा,“ मैं खेलने के लिये नहीं इबादत के लिये पैदा किया गया हूॅ।” इसके अतिरिक्त आप को अक्सर एक आकाश वाणी सुनाई देती ऐ बदी उद्दीन मेरी तरफ़ आओ।आप अचरज़ में पड़जाते।

शिक्षा

आप की औपचारिक शिक्षा के शिक्षक हज़रत सदीद उद्दीन हुज़ैफ़ा शामी मरअशी हैं जो अपने समय के बहुत बड़े विद्वान थे वह भी कहा करते थे कि यह बालक अपने समय का सबसे बड़ा सन्त होगा। इन्हों ने ज़िन्दाशाह मदार को सईदे अज़ली कहकर पुकारा है।इसके अतिरिक्त आप आसमानी किताबों ज़ुबूर,तौरेत,इंजील,कुरआन और आदि ग्रंथो के आलिम व हाफ़िज़ थे तथा उस समय की लगभग ६०० भाषाओं के ज्ञाता थे और 260 भाषाओं में दक्ष थे रीमिया, कीमिया, हीमिया और सीमिया का भी परिपूर्ण ज्ञान था।

मदीने के लिये प्रस्थान

हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ने सर्व प्रथम मदीने के लिये **257** हिजरी सफ़र के महीने में प्रस्थान किया और अकेले पद यात्रा आरम्भ की रास्ते में अब्दुल वहाब कुछ दूर तक आपके साथ होलिये आपने एक ग़ार में विश्राम किया और तीन दिन के विश्राम के उपरान्त आप सर्व प्रथम मशदुल हुसैन नामक स्थान पर पहुँचे इसे पहले मशदुल नुक़ता कहा जाता था यह वह स्थान है जहाँ हज़रत हुसैन अलै० का सर एक पत्थर पर रखा गया था और उस पत्थर ने हुसैन के ख़ून को सोख़ लिया था यह अलप्पो यानी हलब जो ईराक़ की सरहद रक़्क़ा जिसकी छोटी सी ख़ानक़ाह मारूतोमरूसा है और यह जबले हर्बी से ओजान के साथ नहरे क़बीज़ में स्थित है पहुँच कर पत्थर से लिपट गये और अपने पूर्वज का लहू देख कर आपकी भूख प्यास नींद समाप्त हो गयी और आपने रोज़े रखना प्रारम्भ कर दिये शाम को आकाश से दो रोटियाँ प्रकट होतीं एक आप खाते और दूसरी किसी पात्र को दे देते ।

एक दिन आकाश वाणी सुनाई दी ओर आपने अपनी यात्रा दारुस्सलाम की ओर शुरू की **259** हिजरी में दारुस्सलाम पहुँच कर आप ने बैतुल मुक़द्दस के दर्शन किये यहाँ हज़रत बायज़ीद बुस्तामी उर्फ़ तैफ़ूर शामी रज़ि० ने आपको हाथों हाथ लिया और अपना शिष्य व उत्तराधिकारी नियुक्त करते हुए ज़िन्दाने सौफ़ की उपाधि दी।

मदीने मुनव्वरा में उपस्थिति

आप ने यथाशीघ्र वहाँ से प्रस्थान किया और मक्का उपस्थित हुए हज अदा किया तदोपरान्त मदीने पहुँचे यहाँ आपको मुहम्मद सल्ल० की ओर से हिन्दुस्तान जाने का आदेश हुआ आदेश मिलते ही आप अपने वतन लौट गये माँ बाप को इस आदेश से अवगत कराया फिर **269** हिजरी में हिन्दुस्तान के लिये चल दिये और ताशक़न्द की ओर चले गये जहाँ से लौटना पड़ा जब आप समरक़न्द होते हुए आ रहे थे तो रास्ते में आपको हूद क़ौम के लोग और ख़ुसरून क़ाफ़िले के लोग मिले जो आपसे प्रभावित होकर आपके साथ हो लिये और तौस तक आपका साथ दिया।

अहमद बिन मसरूक़ को ख़िलाफ़त

जब आप खुरासान से गुज़र रहे थे तो आपका परिचय अहमद बिन मसरूक़ से हुआ ये निसन्तान थे आपने इनको पुत्रवान होने की दुआ की तथा शिष्य और अपना उत्तराधिकारी बनाया। इनके दोस्त अब्दुल क़ादिर ज़मीरी ने बग़दाद में एक दावते ख़ास का प्रबन्ध किया जिसमें हज़रत जुनैद बग़दादी, अहमद बिन मसरूक़, बूअली रूदबारी आदि ने प्रतिभाग किया। इस अवसर पर आपने अब्दुल क़ादिर ज़मीरी तथा बूअली रूदबारी को शिष्य बनाया अब्दुल क़ादिर ज़मीरी आपके साथ हिन्दुस्तान के लिये चलदिये

हिन्दुस्तानी व्यापारियों से भेंट

हज़रत ज़िन्दा शाह मदार रज़ी० बग़दाद से बसरा के लिये निकले रास्ते में हज़रत शिब्ली रह० और हज़रते मन्सूर से भेंट हुयी बसरा पहुँचे जहाँ अकाल पड़ा हुआ था लोगों के अनुरोध पर आपने दुआ की इतनी वर्शा हुई कि शिकायत न रही लेकिन आप जिस उद्देश्य से बसरा गये थे पूरा नहुआ हिन्स्तान के लिये कोई भी जहाज़ नहीं था संयोग से आपकी भेंट हिन्दुस्तानी व्यापारियों से हुयी उन्हों ने आपको हिन्दुस्तान ले जाने का वचन दिया लेकिन उनका जहाज़ जददा की बन्दरगाह पर लंगर अंदाज़ था इसलिये आप जददा अपने शिष्यों के साथ पहुँचे।

हिन्दुस्तानी व्यापारियों के साथ **281** हिजरी के अन्तिम महीने के अन्तिम दिनों में मात्र **24** शिष्यों के साथ जहाज़ पर सवार हुए शेष को वापस जाने का आदेश दिया जहाज़ चल दिया अचानक समुद्र में तूफ़ान आया पहले जहाज़ के दो अटुकड़े हुए फिर जहाज़ बिल्कुल टूट गया और व्यापारियों से आपका सम्बन्ध टूट गया ज़िन्दा शाह मदार ने साहिल पर सुरक्षित पहुँचने की दुआ की और आप **12** दिन के बाद मोहर्रम की दसवीं तारीख़ को मालाबार के साहिल पर जा लगे लेकिन आपके **7** साथी भूख प्यास आदि के कारण शहीद हो गये ।

विचित्र हालात

आपने दो रकअत नमाज़ अदा की जब सजदे से सर उठाया तो हज़रते ख़िज्र पैग़म्बर को खड़े पाया जो आपके साथियों को कददो निगार बाग़ में

छोड़ कर आपको अपने साथ लेकर ज़र निगार महल में प्रवेश किया जहाँ हज़रत मुहम्मद सल्ल० प्रसिद्ध अम्बिया के साथ आलमे मिसाल में तशरीफ़ लाये और आपको 9 कौल खीर के खिलाये तथा स्वर्ग के वस्त्र पहनाये और मदारुल आलमीन व महबूबियत की पदवी प्रदान की इसके बाद आपने सम्पूर्ण आयु का रोज़ा रख लिया और आपके वस्त्र भी कभी मैले नहीं हुए।

हिन्दुस्तान पर सूक्ष्म दृष्टि

मुसल्मानों का दावा है कि हज़रत आदम स्वर्ग से हिन्दुस्तान जन्नत निशान में उतारे गये और सर्व प्रथम अल्लाह का पैग़ाम सुनने का सौभाग्य हिन्दुस्तान को प्राप्त हुआ इनके दावे की पुष्टि सरनद्वीप पर 8 फुट लम्बा आपके पॉव का निशान आज भी मौजूद है। आज से लग भग 4000 वर्ष पूर्व हिन्दुस्तान में आर्य घुस आये थे और यहाँ की शान्ति को बहुत हानि पहुँचाई थी तथा द्रविणो को अपना दास बना लिया था ये अग्नि सूर्य और मौत के पुजारी थे । हिन्दुस्तान पर 527 वर्ष ईसा पूर्व महावीर का शासन रहा 483 ईसा पूर्व बौद्ध धर्म के प्रवर्तक गौतम बुद्ध का काल रहा । मौर्या परिवार ने 321 ईसा पूर्व से लेकर 150 ईसा पूर्व तक शासन किया चन्द्र गुप्त मौर्या चूँ कि मौर्या नाम की शूद्र स्त्री से जन्मा था इस लिये इस के शासन काल को मौर्या काल कहते हैं इसी परिवार में अशोक वर्धन का शासन स्थापित हुआ इसने बौद्ध धर्म को बहुत बढ़ावा दिया। महाराजा हर्ष वर्धन के शासन काल में लगभग 900 वर्श तक बौद्ध धर्म हिन्दुस्तान का एकल धर्म रहा व्हानसॉग कहता है कि बौद्ध धर्म हिन्दुस्तान ब्रहमनी धर्म मे सम्मिलित हो गया और अपना गौरव खो दिया इस धर्म में भी औतारों की भरमार और मूर्ति पूजा का वर्चस्व हो गया। यदि अरब सैकड़ों बुतों को पूज रहे थे तो हिन्द में हज़ारों बुतों की पूजा हो रही थी यदि अरब अपनी बेटियों को ज़िन्दा दरगोर कर रहे थे तो हिन्दुस्तानी अपनी स्त्रियों को ज़िन्दा जला रहे थे यदि अरब का एक गिरोह काबे का नंगे होकर परिक्रमा कर रहा था तो हिन्दुस्तान में नंगे स्त्री पुरुशों की पूजा हो रही थी। वैसे भी अरब और हिन्दुस्तान वर्षो से अनौपचारिक सम्बन्ध बनाये हुए थे आपस में पूर्व के व्यापारिक सम्बन्ध भी मिलते हैं इसके अतिरिक्त एक प्रचलित

कहावत है कि हज़रत तमीमदारी 9 हिजरी में मुसल्मान होने के उपरान्त हिन्दुस्तान चले आये और दक्षिण भारत के मदारस क्षेत्र में आपकी समाधि है।;ख़िलाफ़ते राशिदा हिन्दुस्तान की बड़ाई में चार चॉंद उस समय और लग गये जब पैग़म्बरे इस्लाम मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम ने फ़रमाया''मैं हिन्दुस्तान से आती हुयी अध्यात्मिक सुगन्ध का आभास कर रहा हूँ''हज़रत अली ने फ़रमाया,''सबसे पवित्र और सुगन्धित स्थान हिन्दुस्तानहै'';सजिस्तय मरजान ये हिन्दुस्तान की पवित्रता का सर्व श्रेष्ठ उदाहरण है। हज़रत उमर के ख़िलाफ़त काल में अरबों ने जब अपने पूर्वी शासन में हिन्दुस्तान कोभी सम्मिलित किया था । चूँकि हिन्दुस्तानी अरबी बेड़ों को रास्ते में ही लूट लिया करते थे इसलिये हज़रत उसमान ने अपने ख़िलाफ़त काल में सर्व प्रथम हकीम बिन जबाला को हिन्दुस्तान भेजा और स्थिति जानी तदोपरान्त बहरीन के एक वाली ने गुजरात और काठियावाड़ पर दरिया के रास्ते से हमला किया और बग़ैर किसी को हानि पहुँचाये क़ाबिज़ हुए। हज़रत अली के ख़िलाफ़त काल में सीस्तान की ओर से कुछ मुसल्मान हिन्दुस्तान में घुस आये लगभग 115 हिजरी में मुहम्मद बिन क़ासिम ने सिन्ध पर विजय प्राप्त की। उस समय से लेकर मोतसिम अब्बासी के ख़िलाफ़त काल तक ख़लीफ़ा की ओर से कोई न कोई शासक आकर यहाँ शासन करता।

सुलेमान, शहरियार, इब्ने हौक़िल, और अस्तसखरी के सफ़र नामों के ऐतबार से ऐसे साक्ष भी मिले हैं इसी काल में मुस्लिम सूफ़ी सन्तों का रुख़ भी हिन्दुस्तान की ओर हुआ इन सूफ़ियों को कुछ इतिहासकारों ने सौदागर कहकर भी याद किया है इन सम्मानित सूफ़ियों में हज़रत बदी उद्दीन अहमद जिन्दा शाह मदार रज़िअल्लाह तआला अन्हु सर्वोपरि हैं। हज़रत जिन्दा शाह मदार 17 बुज़ुर्गों के साथ मालाबार के साहिल पर उतरे इनका जहाज़ टूट गया था। यहाँ आपने गुजरात के बल्हर राजाओं और मालाबार के सामुरी राजाओं मोहसिन और मेहरबान पाया।

इस्लाम के प्रचार का नया रास्ता

हिन्दुस्तान के इस क्षेत्र में कोई ख़ास परिवर्तन नहीं हुआ था ऋषियों और मुनियों का बोल बाला था पाखण्डियों का डंका बज रहा था ऋशियों

और मुनियों की इबादत का तरीक़ा ये था कि वो अपनी इंद्रियों को बंद कर के अपनी श्वॉस पर क़ाबू पा लेते थे इस तरह उनका सम्मान अधिक होता था ये अधिकतर जंगलों में रहते थे। हज़रत ज़िन्दा शाह मदार को इस वातावरण में इस्लाम के प्रचार का एक नया रास्ता मिला और आपने हब्स दम,नफ़ी अस्बात, फ़ासनिफ़ास आदि आरम्भ किया नई प्रक्रिया देख कर लोग आपके पास जमा होने लगे और अपनी बात कहने में आसानी हो गयी।मगर जब आप ने प्रचार किया तो कुछ संगठन जैसे महा कालिया, चन्द्र भक्तिया, विक्रान्तिया, आवतिया भक्तिया ने विध्न डालना शुरू किया जिससे कठिनाइयों का भी सामना करना पड़ा अतः आप अपने चन्द मुटठी भर साथियों को लेकर पहाड़ों में चले गये और जब उनके सामने तख़्त पर उड़ते हुए प्रकट हुए तो उन्हें अचम्भा हुआ और वो भी आपके साथ हो लिये । फिर जब लोगों से प्रेम बढ़ा तो लोगों ने दो बड़े तीर्थों के बारे में बताया आप बेचैन हो गये और अपने साथियों के साथ गुजरात के लिये चल दिये दरियाये चुनाब और तूमी के समीप क़स्बा टॉंडा पहुँच कर मनु मेहरिस्त " कश्ती वाला मनु अर्थात नूह अलैहिस्सलाम" की समाधि के दर्शन किये। जब आप आदम की चोटी की ज़्यारत के लिये जा रहे थे तो कंगानूर के बन्दरगाह में राजा चैरोमन पैरामल सामुरी आपका स्वागत किया और 36 हज़ार लोगो के साथ मुसल्मान हो गया। चैरोमन ने शाही आदेश के माध्यम से मुसल्मानों को मस्जिदें बनाने की अनुमति देदी इसी के अनुपालन में मालाबार में कई जगह मस्जिदें बनाई गयीं और समुद्र के किनारे किनारे नौ मुस्लिम बस्तियॉं स्थापित हुयीं । इनमें कई बुज़ुर्गों ने नौ मुस्लिम लड़कियों से शादियॉं भी कर लीं जिनके परिवार दमोफला माला बार आरै हटिया के नाम से कोकिन में में प्रसिद्ध हुआ।प्रसिद्ध इतिहासकार बिलाज़री ने भी इस स्थिति को दर्शाया है। इसके अतिरिक्त बुज़ुर्ग बिन शहरियार,और सौदागर सुलेमान जो तीसरी सदी हिजरी में हिन्दुस्तान आये थे ने लिखा है कि इन राजाओं के दिलों में मुसल्मानों के लिये बहुत सम्मान था। सन् 304 हिजरी में आपने अपना सब कुछ अब्दुल क़ादिर ज़मीरी बग़दादी पर छोड़ा और राजा चैरोमन पैरामल सामुरी के अति

निवेदन पर राजा को साथ लेकर हज्ज और मदीने के लिये प्रस्थान किया सन् **305** में राजा आपसे बिछड़ गया फिर उसका कहीं पता न चला और आप अपने वतन पहुँचे माँ बाप से मिले जो अपने तीन जवान बेटों के ग़म में निढाल हो चुके थे और चाहते थे कि आप उनके बुढ़ापे का सहारा बने अतः आपने अपने माता पिता को लिया और हलब शहर जिसे अलप्पो कहते हैं मस्जिदे ख़लील के समीप एक मकान में आ गये।

सीरिया इस समय क़रामतियों के जगह जगह हमले से त्रस्त था ही कि अकस्मात एक बुरी ख़बर ने झिंझोड़ कर रख दिया सन् **316** हिजरी के क़रीब क़रामतियों ने संग अस्वद को चोरी कर लिया और बहरीन ले गये। ये ख़बर आपके पिता हज़रत क़िदवत उद्दीन अली हलबी के लिये भी भारी पड़ी और दिल का दौरा पड़ने से आपका स्वर्गवास हो गया । हज़रत ज़िन्दा शाह मदार के पिता की समाधि के फूल अभी मुरझाए भी न थे कि आपकी माता जनाब बीबी हाजरा तबरेज़ी भी दुनिया से रुख़्सत हो गयीं वालिदैन का साया उठ जाने के बाद आप अपने भतीजों के सहारा बने कई मर्तबा संगेअस्वद के लिये प्रयास किया परन्तु विफल रहे।

इतिहास के पन्ने पलटने से पता चलता है कि सन् **336** हिजरी के क़रीब अबू ताहिर से एक सन्धि हुयी जिसमें ये तय पाया गया कि जो व्यक्ति अब्दुल्लाह बिन मैमून के ऑखों की रौशनी लौटा देगा उसको संगे अस्वद दे दिया जाएगा। आपने वहाँ के असरदार लोगों को साथ लेकर किसी प्रकार संगे अस्वद को ग़ुस्ल देकर उसका पानी ऑखों पर मलवा दिया जिससे उसकी ऑखों की रौशनी वापस आ गयी तारीख़े तेहरान के हवाले से शम्स उद्दीन नौरोज़ क़ादरी अपनी ग़ैर मतबूआ किताब में तहरीर फ़रमाते हैं कि हज़रत कुतबुल मदार और उनके साथियों ने संगे अस्वद को उसी स्थान पर स्थापित कर दिया जहाँ पर पहले था। तदोपरान्त आप हिन्दुस्तान के लिये चल दिये।

हिन्दुस्तान की दूसरी यात्रा

हज़रत ज़िन्दा शाह मदार तख़्ते हवाई पर उड़ते थे कि इमादुल मुल्क जो जिन्नातों का बादशाह था अचम्भे में पड़ गया और आपके समक्ष प्रस्तुत होकर कुछ वार्ता की और इतना प्रभावित हुआ कि बैयत की अर्थात गुरू माना और सब कुछ छोड़ कर आपके साथ हो लिया हज़रत ज़िन्दा शाह मदार भरोच गुजरात पहुँचे और प्रचार वहीं से आरम्भ किया जहाँ से आप छोड़ कर गये थे आपने साबर मती नदी के किनारे ठहरे यहाँ आपसे जो चमत्कार हुए उनसे प्रभावित होकर लगभग **36** हज़ार लोगों ने इसलाम धर्म स्वीकार किया यहाँ से आप बहसाड़ा, राधनपुर, होते हुए पालनपुर पहुँचे जहाँ के राजा बलवान सिंह ने अपने दरवारियों के साथ इस्लाम स्वीकार कर लिया जो ज़ोर आवर ख़ाँ के नाम से प्रसिद्ध हुआ इसने भी सैकड़ो मस्जिदें बनवायीं।

तारागढ़ अजमेर

हज़रत ज़िन्दा शाह मदार पालनपुर से अजमेर पहुँचे और कोकला पहाड़ी पर विश्राम किया तारा गढ़ के लोगों ने यह कहते हुए आपको रोका कि,'' आप जैसे लोग पहले भी आ चुके हैं उनसे जंग हुयी वो मारे गये उनकी लाशें जंगल में आज भी पड़ी हुयी हैं जिनसे चीख़ने की आवाज़ें आती हैं हम लोग वहाँ जाने से डरते हैं।'' पता लगाने से मालूम हुआ कि वह लाशें ख़िंगस्वारों की हैं अतः आपने लोगों को आश्वासन दिया कि ये आवाज़ें आज के बाद नहीं आयेंगी और आपने लाशों को दफ़न करवा दिया। वहाँ के लोगों ने चैन की साँस तो ली पर **52** व्यक्ति आपके क़ाफ़िले को लूटने के लिये पहाड़ी पर चढ़ आये और जैसे ही निकट पहुँचे अंधे हो गये परन्तु ज़िन्दा शाह मदार के वज़ू का पानी मलने से दिखाई देने लगा इस चमत्कार से प्रभावित होकर स्लाम स्वीकार कर लिया । ये लोग आज भी बानगोत्र के नाम से जाने जाते हैं। इनमें एक चौहर सुद्ध भी थे जो इस्लामनबी के नाम से प्रसिद्ध हुए और आपके उत्तराधिकारी भी बने।एक बार एक जोगी अधर नाथ जादूगर लोहे के टुक्ड़ों को जादू से चने बनाकर लाया आपने चने

अपने साथियों में बँटवा दिये और एक चना ज़मीन में गाड़ दिया जो फूट आया और तमाम चने साथियों ने खालिये अधर नाथ ये देख कर भौचक्का रह गया फिर इस्लाम स्वीकार कर लिया और ये मिसाल प्रचलित हो गयी ''फ़क़ीरी क्या लोहे के चने चबाना है।''

बाबा रतन सहाबी

हज़रत ज़िन्दा शाह मदार अजमेर से भटिण्डा पहुँचे यहाँ आपकी भेंट अबू रज़ा बाबा रतन हिन्दी जो सहाबिये रसूल सल्ल० थे से हुयी ये हिन्दुस्तान के कश्मीरी ब्राहम्णों मे से थे और शक़्कुल क़मर के मोजिज़े को अपनी आँखों से देखा था और मदीने पहुँच कर ईमान लाये थे हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ने बाबा रतन के बेटों अब्दुल्लाह और महमूद से भी भेंट की बाबा रतन जब मदीने गये तो साथ में तमर हिन्दी यानी इमली लेकरगये मुहम्मद साहब को दी और मुहम्मद साहब ने इनको अपनी कंघी दी और लम्बी उम्र की दुआ दी। सहाबा ने इतिहासकार शम्स उद्दीन मुहम्मद बिन इब्राहीम जुज़ी की तारीख़ से भी हवाला दिया है।

राजा जसवन्त सिंह

राजा जसवन्त सिंह ने पहले सफ़र में ही हज़रत ज़िन्दा शाह मदार से एक ऐसे आलिम को भेजने का आग्रह किया था जो बौद्ध पंडित से शास्त्रार्थ कर सके अतः हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ने अब्दुल्लाह को भेज दिया जो मन्तिक़ में दक्ष थे बौद्ध पंण्डित से अध्यात्म पर कई दिन तक बहस हुयी जब पंडित हार गया तो उसने हज़रत अब्दुल्लाह को ज़हर देकर शहीद कर दिया। इब्ने नदीम ने अलकुण्डी **349** के हवाले से भी लिखा है राजा जसवन्त सिंह चूँकि आपसे प्रभावित था अतः वो खम्माच में आपके समक्ष प्रस्तुत होकर इस्लाम में दाख़िल हो गया और ये जाफ़र ख़ाँ के नाम से प्रसिद्ध हुआ इसने भी अनगिनत मस्जिदें निर्मित करायीं।

हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ने जब निचले तबक़े को गले लगाया जिनका पेशा जगह जगह कर्तब दिखाना था जंगली जानवरों के साथ खेल तमाशे करना था वो सब अपने को ''मदारी'' कहने लगे और बाज़ आपके उत्तराधिकारियों से मुतास्सिर होकर अपने को ''क़लन्दर'' कहने लगे ।

बाद में इनकी क़ौमें बन गयीं।

खोपड़ी में जान आई

सूरत से आप मक्का मदीना के दर्शन हेतु जा रहे थे कि अरब के जंगल में एक खोपड़ी आपके पॉव से टकराई आपने पूछा,“ कौन हैं आप?“मैं मज़दूर हूँ मेरे छोटे छोटे बच्चे और बूढ़ी मॉ है मुझे डाकुओं ने क़त्ल कर दिया है 12 बरस से इस जंगल में लोगों की ठोकरें खा रहा हूँ।किन्तु आपकी ठोकर ने मुझे बोलने की शक्ति प्रदान कर दी।”इब्नेअहमद क़ानी हरीमें समदियत में लिखते हैं कि चन्द क्षणों में वह जिस्मो जान के साथ उठ कर खड़ा हो गया। हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ने कहा 9 वर्ष तक आप अपने परिवार के साथ जीवित रहें और चलदिये।मक्का पहुँचे हज्ज किया फिर मदीना उपस्थित हुए अनुमति लेकर नजफ़ और काज़मैंन पहुँच कर हज़रत इमाम मूसाकाज़िम, इमाम मुहम्मद तक़ी, इमाम हसन अस्करी आदिकी समाधियों पर श्रद्धा सुमन अर्पित किये तदोपरान्त अपने अध्यात्मिक गुरु हज़रत बायज़ीद बुस्तामी उर्फ़ तैफ़ूर शामी के मज़ार पर रहकर शग़्ले हयाते अब्दी और शग़्ले सुल्तानुल अज़कार में विलीन रहे।फिर आपने हलब,काज़मैन, बग़दाद करबला, नजफ़ और इसराईल की यात्रा की।

आकाश से भोजन प्रकट हुआ

जब आपने इसराईल के घने जंगल में विश्राम किया समीप में पानी का चश्मा बह रहा थाअचानक मुहम्मद बिन अली और अबू बक्र वारिक़ आ पहुँचे थोड़ी ही देर में 40—50 लोग इकट्ठा हो गये। हज़रत ज़िनदा शाह मदार ने मुहम्मद बिन अली के कहने पर आकाश की ओर इशारा किया बस क्या था कि आकाश से भोजन प्रकट होने लगा लोगों ने ख़ूब पेट भर कर खाया मुहम्मद बिन अली ने कुछ ऐसे प्रश्न किये और हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ने ऐसे जवाब दिये जिससे लोग अनभिज्ञ थे फिर सभी चलेगये।

हिन्दुस्तान की तीसरी यात्रा

भौंकने वाला कुत्ता बना देते

बंगाल में बाकड़ा के क़रीब आपका क़याम हुआ यहाँ के रहने वाले जादूगर थे वो इन्सानों को भौंकने वाला कुत्ता बना देते जानी मुहम्मद इब्ने अहमद क़ानी अलकवाकिबुद्दरारिया में लिख्ते हैं कि जब आपने इस्लाम की दावत दी तो उन्होंने जादू करना शुरू किया जब ज़िन्दा शाह मदार और उनके साथियों पर इसका असर नहीं हुआ तो क्षमा याचना करने लगे और इस्लाम स्वीकार कर लिया।

बकरी बना दिया

हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ने अपने एक साथी को समीप के एक गाँव में भेजा गाँव के जादूगरों ने उन्हें बकरी बना दिया जब आपको उनके हाल का समाचार मिला तो आप ख़ुद वहाँ पहुँचे और उनकी बाँदियों पर दृष्टि पड़ते ही उनके शरीर बदल गये ये देख कर वो समझ गये इनसे उलझना ठीक नहीं कुछ वार्ता लाप के उपरान्त उन सब ने इस्लसम ग्रहण करलिया।

ख़ानदान वालों से भेंट

हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ने रहीम पुर की यात्रा की यहाँ के लोगों ने भी आप पर जादू किया और जादू का प्रभाव न होने पर क्षमा याचना करली और आपके साथ हो लिये। यहाँ से आप बंगाल, चटागांग, बर्मा, हाईनान, ताईवान, चम्पा, कम्बोडिया,चीन, जापान, रूस, मंगोलिया और फिर रूस, चीन, तिब्बत, नेपाल, आसाम, बर्मा, बंगाल होते हुए बिहार पहुँचे और सहसराम में तथा टावन कोर व कोचीन में बहुत समय तक इस्लाम की अधितीय शिक्षा का प्रचार प्रसार करते रहे।फिर हज के लिये प्रस्थान किया तदोपरान्त अपने वतन सीरिया के शहर अलप्पो पहुँच कर अपने भाई के वंश में हज़रत अबू सईद से उनके अन्तिम समय में भेंट की और अपने प्रपौत्र इस्माईल को गोद में लेकर ख़ूब दुआयें दीं। अल्प समय विश्राम के उपरान्त आप करबला और काज़मैंन होते हुए बग़दाद में विश्राम किया।

साहबे मिर्रतुन्निसाब ने लिखा है कि इस मर्तबा जब आप बग़दाद पहुँचे तो बीबी नसीबा जो हज़रत ग़ौसे पाक की बहिन थीं और निसन्तान थीं सन्तान के लिये प्रार्थना की आपने दुआ की और दो बेटे होने की ख़ुशख़बरी दी। आपने यहाँ से क़ादसिया, ईरान की यात्रा करते हुए ख़ैबर के रास्ते से हिन्दुस्तान आरहे थे कि काबुल में विश्राम किया आपका एक शिष्य समीप के कुए से पानी लेने गया किसी बात को लेकर वहाँ उपस्थित लोगों ने पानी नहीं भरने दिया जब ये बात आपको मालूम हुयी तो आपने कहा जाओ और कुए से कहना साक़िये कौसर के पोते ने पानी मंगाया है शिष्य ने ज्यों ही ये शब्द कहे कुएँ से पीनी उबलने लगा और गाँव में फेलने लगा लोगों के क्षमा याचना करने पर पानी रुका। यहाँ आपसे बहुत से चमत्कार हुए।

हिन्दुस्तान की चौथी यात्रा

सातवाँ बादशाह

हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ने हिन्दुस्तान में जिस स्थान पर विश्राम किया वो शाह वाला कहलाया जो बाद में साहीवाल हो गया ये स्थान चक नं० **90** दरबारे शाह मदार के नाम से प्रसिद्ध है यहाँ से बहावलपुर वहाँ से हैदराबाद फ़क़ीर का पेड़ तदोपरान्त कराची में जो आज मंगूपीर के नाम से प्रसिद्ध है ठहरे आपकी करामत से यहाँ दो चश्मे जारी हुए एक से गर्म और एक से ठंडा पानी निकलता है यहाँ से शर्फ़ नगर कुछ समय व्यतीत करने के उपरान्त देहली के रास्ते से बग़ैर देहली में रुके हुए भरत पुर प्रस्थान किया इस समय हिन्दुस्तान पर ग़ज़नवी बादशाहत का सातवाँ बादशाह सुल्तान इब्राहीम शासक था जिसने **450** हिजरी से **493** हिजरी तक शासन किया। डेग में आपने कुछ दिन विश्राम किया यहाँ मदार की छड़ियों का मेला होता है यहाँ से ग्वालियार चले गये गये और शहर से बाहर विश्राम किया आज ये मदार का चिल्ला कहलाता है यहाँ मस्जिद हुजरे और प्राचीन समाधियाँ बनी हुई हैं ग्वालियार में भी एक मदार टीकरी पर्बत है यहाँ पर हुजरे हैं एक हौज़ है जो पत्थर काट कर बनाया गया है इसका रास्ता तंग है रास्ते में एक छोटा सा मंदिर पड़ता है इसे बालापीर कहते हैं। यहाँ आपने बहुत

सें दिन व्यतीत किये तदोपरान्त आपने झॉसी के लिये प्रस्थान किया जहॉ पर आज मदार गेट है इसके आस पास विश्राम किया यहॉ आपसे बहुत से चमत्कार हुए। झॉसी से पालनपुर, मौदहा, जबलपुर होते हुए होशंगाबाद पहुॅच कर आमला और भण्डारा में जमकर लोगों का मार्ग दर्शन किया मदार का भण्डारा की बिना पर इस स्थान का नाम भण्डारा पड़ा हैदराबाद ए०पी० में जिस स्थान पर आपने विश्राम किया वो दरगाह मदार शाह के नाम से प्रसिद्ध है चेन्नई में आपने विश्राम किया तो ये स्थान मदारस और अंग्रेज़ी शासन काल में मडरास के नाम से प्रसिद्ध रहा यहॉ आपने अधिक समय व्यतीत किया फिर पॉडीचरी में पदार्पण किया तदोपरान्त लंका चले गये।

बड़ी ज़्यारत गाह

आपने जाफ़ना,टृंकोमली,अनुरोधपुरा और कोलम्बो को सुशोभित किया चिल्ला मदार शाह कोलम्बो में बड़ी ज़्यारत गाह है यहीं से आप लाल सागर होते हुए जद्दा चले गये। हज के उपरान्त नजफ़ अशरफ़ होते हुए एक बार फिर बग़दाद में ठहरे।पुस्तक मिर्रतुन्निसाब आदि में है कि बीबी नसीबा जो ग़ौसे पाक की बहिन हैं के बड़े पुत्र का देहान्त हो गया वह लाश को लेकर हज़रत ज़िन्दा शाह मदार के पास आयीं तो आपने कहा उठो जानेमन और वह ज़िन्दा हो गये इनका नाम सैयद मुहम्मद था जो बाद में जानेमनजन्नती के नाम से प्रसिद्ध हुए। पुस्तक समरातुलक़ुद्स में वर्णित है कि हज़रत ग़ौसे पाक जीलानी भी इसी यात्रा में यह चमत्कार सुनकर मिलने के लिये आये इस समय उनका ये हाल था कि यदि किसी पक्षी की ओर घूर कर देख लें तो वो जल जाता था हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ने इन की इस स्थिति को परिवर्तित कर दिया ताकि जीव सुरक्षित रहें। ग़ौसे पाक ने अपने दोनों भॉजे सैयद मुहम्मद और सैयद अहमद तथा दोनों भतीजों मीर शम्स उद्दीन व मीर रुक्न उद्दीन को हज़रत ज़िन्दा शाह मदार को सौंप दिया।

क़हक़हा मार कर हॅसने का इबरतनाक वाक़्या

इस मर्तबा जब हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ख़ुरासान ठहरते हुए अस्फ़हान पहुॅचे तो मक्की मुकर्रमग़ाज़ी ने आपकी दुआ से असलम ग़ाज़ी के पैदा होने की ख़ुशख़बरी के पेश किया आपने बैयत किया और अपना उत्तराधिकारी

भी बनाया। जब आप करमान पहुँचे तो हज़रत ख़्वाजा मुईन उद्दीन चिश्ती ने भी करमान पहुँच कर आपसे मुलाक़ात की आपने उन्हें क़हक़हा मारकर हँसने का इबरत नाक वाक़्या बताया और कहा मुईन उद्दीन हिन्दुस्तान का वातावरण पिछले अरबों से कम नहीं है उनसे बड़ी नर्मी से पेश आने की आवश्यक्ता है।

तुनतुन मदार

असंख्य लोगों के साथ आप दमिष्क़ पहुँचे कुछ रोज़ विश्राम करने के उपरान्त तुर्की के लिये प्रस्थान किया फिर यहाँ से काला सागर होते हुए कुसतुनतुनियाँ में आप जिस स्थान पर ठहरे उसे आज तुनतुन मदार कहते हैं। आपने यहाँ से बुख़ारिस्ट, रूमानिया, पेरिस, स्पेन आदि की यात्रा की स्पेन में इस समय मोहिद्दीन परिवार का शासन था यहाँ आपका जबरदस्त स्वागत किया गया आप यहाँ से इटली, रोम, मोरक्को, लीबिया होते हुए क़ाहिरा में ठहरे यहाँ हकीम अहमद मिस्री अल्लाह के प्रकोप का इलाज कर रहे थे हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ने हकीम साहब से भेंट की और कहा जब तक शहर के लोग यतीमों का माल वापस नहीं कर देते और तौबा नहीं कर लेते प्रकोप से छुटकारा नहीं मिल सकता। यहाँ से आप सूडान चले गये जहाँ आपसे बहुत से चमत्कार हुए अपने साथियों को आपने हिन्दुस्तान जाने का आदेश दिया और आप ईथोपिया होते हुए मालद्वीप चले आये।

हिन्दुस्तान की पाँचवीं यात्रा

वो इल्म जो कभी सुना भी न हो

माल द्वीप में आपने मात्र ४० दिन ही विश्राम किया और हिन्दुस्तान के लिये प्रस्थान किया रास्ते में शेख़ अबू तुराब को बेयत किया और कोकिन में विश्राम किया मुम्बई में अनेक स्थानों पर आप ठहरते हुए सूरत पहुँचे मुम्बई में **6** सूरत में **55** स्थानों पर आपके चिल्ले थे **30** स्थानों पर आज भी आपके चिल्ले स्थापित हैं।यहाँ शेख़ इलियास गुजराती जो हज़रत ख़िज़्र के

के भेजे हुए थे आप से भेंट की शेख़ इलियास ने कहा मुझको ख़िज़्र पैग़म्बर ने इस लिये भेजा है कि आप मुझे वो इल्म सिखायें जो कभी सुना भी न गया हो आपने कहा संसार से प्रेम छोड़ दो इलियास यह कह कर चले गये कि मैं फ़क़ीर बन्ना नहीं चाहता कुछ ही दिनों में उन्हे बर्स से पीड़ित हो गये तो तुरन्त ज़िन्दा शाह मदार के पास लौट आये आपने अपनी लार पानी में डाल कर गुस्ल करा दिया तो ठीक हो गये।इसी प्रकार शेख मुहम्मद लाहौरी हज के लिये जा रहे थे सम्पूर्ण भारत में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में हज़रत ज़िन्दा शाह मदार की प्रसिद्धता थी शेख़ मुहम्मद लाहौरी ने अपना आशय बताया आपने कहा कि मेरी परिक्रमा करलो हज हो जायेगा उन्हों ने ऐसा ही किया और देखा ज़िन्दा शाह मदार के स्थान पर काबा है और जब हज पूरा हो गया तो आप वहीं थे।ज़िन्दा शाह मदार यहाँ से एक बार फिर अजमेर पहुँचे।

ख़्वाजा मुईन उद्दीन चिश्ती फिर ज़िन्दा शाह मदार की शरण में

अजमेर राजा पृथ्वी राज की राजधानी था जिसे राये पिथौरा भी कहते थे अजमेर पहुँच कर ज़िदा शाह मदार कोकला पहाड़ी पर सुशोभित हुए आपके आगमन के कुछ ही समय पश्चात हज़रत ग़रीब नवाज़ ख़्वाजा मुईन उद्दीन चिश्ती हज़रत ज़िन्दा शाह मदार की अजमेर में उपस्थिति जानकर अपने विशिष्ट साथियों को लेकर अजमेर आ गये और पहाड़ी के नीचे साथियों को छोड़ कर ज़िन्दा शाह मदार से भेंट की तीन दिन के बाद वापस लौटे तो इतने प्रसन्न थे कि मानो उन्हें संसार की बहुमूल्य वस्तु मिल गयी हो और वो अनासागर की ओर चले गये अब ज़िन्दा शाह मदार के पास जो फ़रियादी आते आप उन्हें ख़्वाजा साहब के पास भेज देते।

कपड़ों को आग में डाल कर साफ़ करना

हज़रत ज़िन्दा शाह मदार कुछ समय अजमेर में व्यतीत करने के उपरान्त मालवा, पंचमहल, बड़ौदरा, खेड़ा, सुरेन्द्र नगर, राजकोट, जूनागढ़ आदि में तबलीग़े दीन करते हुए अरब के लिये रवाना हुए फ़ारस की खाड़ी होते हुए नीमरोज़ में विश्राम किया। हज़रत शाह लुत्फ़ उल्लाह सपने में मुहम्मद साहब का आदेश पाकर हज़रत बदी उद्दीन को ढूँढते ढूँढते नीमरोज जा पहुँचे।

एक दिन ज़िन्दा शाह मदार की आप पर दृष्टि पड़ गई तो आप माला माल हो गये। नजफ़ अशरफ़ तक साथ में रहे जब कपड़े साफ़ करना होते आग में डाल कर साफ़ कर लेते। क़ाज़ी मसूद साहब ने भी यहीं बैयतो ख़िलाफ़त प्राप्त की। नजफ़ से ज़िन्दा शाह मदार करबला, दमिश्क़ शाम के शहर हलब और चिनार भी गये अपने परिवार के लोगों में हज़रत दाउद से आपकी मुलाक़ात हुई जो **80** बीघा ज़मीन के स्वामी थे दाउद के पोते अब्दुल्लाह को गोद में लेकर ख़ूब खिलाया और कहा इस बच्चे को मेरे बाप की तरह एक बड़ी कुर्बानी देना होगी। यहाँ शेख़ मुहम्मद फ़रीद ने भी बैयत प्राप्त की। इसी यात्रा में हज़रत मख़्दूमे पाक मीर अशरफ़ जहाँगीर समनानी भी शरीके सफ़र रहे जज़ाएर फ़िलिस्तीन, कुस्तुनतुनियाँ,और रोम की यात्रा भी की **12** वर्ष तक साथ रहे हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ने इनको ख़िरक़ये मुहब्बत प्रदान किया जो एक प्रकार की ख़िलाफ़त है। हज़रत ज़िन्दा शाह मदार यूरुप के शहर वारसा, मस्क, लंकाड, फिनलैण्ड, नामीबिया, मारीशस आदि स्थानों को सुशोभित करते हुए लंका पहुँचे और आदम का पुल होते हुए हिन्दुस्तान के लिये प्रस्थान किया।

हिन्दुस्तान की छटी यात्रा

इस मर्तबा जब हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ने हिन्दुस्तान की धर्ती पर पॉव रखे तो मुहम्मद तुग़लक़ के शासन का आरम्भ था कावेरी नदी के किनारे आपका कारवॉ ठहरा और आपके आगमन की सूचना चारो ओर फेल गयी। आपने बंगलौर, कोलार,हैदराबाद, गोल कुण्डा, विजय बाड़ा, आलमपुर, वरंगल और गुलबर्गा में बहुत समय तक लोगों का मार्ग दर्शन किया अत्यधिक लोग स्लाम में दाख़िल हुए आपने राएपुर भिलाई आदि की भी यात्रा की। गुलबर्गा बहमनी शासन का केन्द्र था और अला उद्दीन बहमन शाह नया नया बादशाह बना था हज़रत ज़िन्दाशाहमदार के चरणों में अपने को अर्पित कर लाभान्वितहुआ।

बदरी नाथ

अक्सर बस्तियों के बाहर ही आप ठहरते थे आपके मुरीदीन और ख़लीफ़ा पत्थरों और ढेलों को चुन कर हुजरा और मस्जिद निर्मित कर दिया करते थे जहॉं अधिक समय व्यतीत करते वहॉं कुएँ भी खोद लिये जाते और पूर्ण रूप

से निर्माण कार्य होता जब आपने पटना के समीप विश्राम किया तो बदरीनाथ ने आप से भेंट की और अपना कमाल दिखाने का आग्रह किया अनुमति मिलते ही उसने अपने एक चेले को पानी से भरे टब में खड़ा करके पानी कर दिया और कहा क्या आप ऐसा कर सकते हैं हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ने चेलेन्ज स्वीकार करते हुए जानेमन जन्नती को पानी भरे टब में खड़ा कर के पानी कर दिया फिर रुई मंगाकर दोनों टबों में डाल दी और बद्री नाथ से सूँघने को कहा जब बद्री नाथ ने अपने चेले की रुई सूँघी तो सड़ी गंध का अनुभव किया जब जानेमन जन्नती की रुई सूँघी तो ख़ुशबू का अनुभव किया पूछने पर हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ने कहा बद्री नाथ आपने अपने कमाल को कमाल पर तो पहुँचा दिया मगर नास्तिकता की गंध अभी शेष है।बद्रीनाथ ये सुनकर ईमान ले आया।

पटना से छपरा, देवरिया, गोरखपुर, बस्ती, और फ़ैज़ाबाद ठहरते हुए हज़रत ज़िन्दा शाह मदार सरवरपुर मुहाल के समीप नहवीअलीपुर जो अब जलालपुर के नाम से प्रसिद्ध है पहुँचे रास्ते में मुहम्मद साबिर मुल्तानी और असीरकबीर गोंडवी को भी बैयत किया। आप नहवी अली पुर में ही थे कि असलम ग़ाज़ी मुहम्मद बिन हनफ़िया इब्ने हज़रत अली सैयद सालार मसूद ग़ाज़ी के हक़ीक़ी भाँजे पता लगाते हुए नहवी अलीपुर पहुँच गये हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ने दुआओं के साथ मुजाहिदे आज़म का ख़िताब भी दिया। हज़रत ज़िन्दा शाह मदार यहाँ से लखनऊ चले आये और बस्ती के बाहर विश्राम किया रमज़ान का चाँद अब्र के कारण दिखाई नहीं दिया लोगों ने जब आपसे मालूम किया तो आपने कहा कुतब उद्दीन के यहाँ जिस बच्चे ने जन्म लिया है यदि उसने दूध नहीं पिया है तो आज रमज़ान की पहली तारीख़ है। ये बच्चा शेख़ शाह मीना थे।

आख़िरी आराम गाह की निशान देही

लखनऊ में आपके पास हर समय मेला सा लगा रहता था मौलाना शहाब उद्दीन परकालय आतश उनकी बहिन बीबी फ़ैज़न क़िदवाई ने सबसे अधिक लाभ प्राप्त किया यहाँ से आपने संडीला, हरदोई आदि की यात्रा करते हुए फ़र्रुख़ाबाद में उस स्थान पर विश्राम किया जहाँ पर मदार बाड़ी है शम्साबाद,

अताईपुर क़ायमगंज में जहॉ से मदार की मेहदियों का मेला उठता है विश्राम करते हुए आप बरेली चले गये यहॉ आपने 7 स्थानों पर मजालिस स्थापित कीं क़िला,बॉस मण्डी, शहामतगंज,नरयावल, फ़रीदपुर, और पीर बहोड़ा रुक्न तालाब, मदारी गेट पर यहॉ भी मदार के मेले बड़ी धूम से होते हैं। यहॉ से काठगोदा, नैनी ताल, रामनगर पीरूमदारा, जम्मू कश्मीर आदि की यात्रा करते हुए अफ़ग़ानिस्तान निकल गये और ख़ैबर के रास्ते से अरब अन्तिम हज और अपने वतन के दर्शन करने चलेगये वतन से अपने परपोतों अबूमुहम्मद अरगून, अबूतुराब फ़ंसूर और अबुल हसन तैफूर को साथ लेकर हिन्दुस्तान के लिये प्रस्थान किया जब मदीना पहुॅचे तो आदेश हुआ कि हिन्दुस्तान में क़न्नौज के दक्षिण में एक जंगल है जंगल में तालाब है तालाब से या अज़ीज की आवाज़ आयेगी वही तुम्हारा अन्तिम पड़ाव होगा दर्शन के उपरान्त आदेश पाते ही फिर हिन्दुस्तान की तरफ़ कूच किया।

हिन्दुस्तान की सातवीं यात्रा

काशिफ़े इसरारे हक़ ने लिखा है कि इस मर्तबा जब हज़रत ज़िन्दा शाहमदार ने हिन्दुस्तान की धर्ती पर क़दम रखा तो एक अनुमान के अनुसार लग भग एक लाख की भीड़ आपके साथ थी आपने रास्ते में एक खुतबा दिया और अपने उत्तराधिकारियों को सम्पूर्ण विश्व में फैल जाने का आदेश किया हज़रत शेख़ शहाब उद्दीन को चीन, हज़रत शेख़ शम्स उद्दीन को उन्दलस, हज़रत शेख़ अबुल हसन शम्सी को संग द्वीप, हज़रत क़ाज़ी फ़ख्र उद्दीन अली को लाल कोयत, शेख़ सख़ी और अब्दुल फ़ज़ल बुख़ारी को रूस, शेख़ चिरातरी को इण्डो नेशिया, शाह गुलाम अली समर क़न्द एशिया, शेख़ महा बली को कम्बोडिया, शेख़ गुरू गौतम बली को जापान, शेख़ दरबारी शाह को मंगोल, शेख़ कबीर उद्दीन अरबी को उत्तरी रूस, शेख़ मुहम्मद अली दरबन्द को रोम, शाह वली उल्लाह को जज़ाएरे क़ौक़, शेख़ ख़ाकसार ख़ाकमीज़ कोनेपाल, शाह अब्दुल करीम को जुनूबी अफ़्रीक़ा के लिये रवाना किया कुछ को हिन्दुस्तान में फेल जाने का हुक्म दिया और कुछ को वतन जाने की सलाह और चन्द मुख्य साथियों को समक्ष लेकर हिन्दुस्तान के अनगिनत शहरों

क़स्बों मजरों जंगलों पहाड़ों को सुशोभित करते हुए शर्फ़ नगर में विश्राम किया कुछ दिनों के उपरान्त पानीपत, मुज़फ़्फ़र नगर, मेरठ होते हुए दिल्ली पहुँचे।

ज़बरदस्त स्वागत

इस समय देहली में फ़ीरोज़ शाह तुग़लक़ शासक था ज्यों ही हज़रत ज़िनदा शाह मदार ने देहली में प्रवेश किया फीरोज़ शाह ने आपका ज़बरदस्त स्वागत किया हज़ारों लोगों के साथ बैयत हुआ।इसका वज़ीर तो आपका ऐसा दीवाना हुआ कि अपना ओहदा त्याग दिया और आपकी गुलामी में रहना पसन्द किया

जब आपने देहली से प्रस्थान किया तो आपके समक्ष हज़ारों की भीड़ थी हाथी थे जिन पर माही मरातब, डंका, निशान,थे घोड़े थे पैदल थे जिधर निकल जाते या जहाँ ठहर जाते एक शहर आबाद हो जाता। हज़रत ज़िनदा शाह मदार शिकारपुर,बसौली, बिलग्राम आदि स्थानों पर विश्राम करते हुए लखनऊ पहुँचे और गोमती नदी के किनारे एक ऊँचे टीले पर अल्प समय के लिये विश्राम किया। ये समय शाह शेख़ मुहम्मद शाह मीना की जवानी का था हज़रत ज़िनदा शाह मदार ने शहाब उद्दीन परकालये आतश के हाथों अपनी जायनमाज़ भिजवाकर कुतुब के पद पर आसीन किया। .

बे अदबी का परिणाम

लखनऊ में अल्प समय व्यतीत करने के उपरान्त आपने काल्पी की ओर प्रस्थान किया और उन्नाव मावर आदि सीनों को सुशोभित करते हुए काल्पी में जमुना के किनारे विश्राम किया लाखों की भीड़ एकत्रित हो गई हर समय एक मेला सा लगा रहता सैयद सद्र उद्दीन अहमद, मौलाना शेख़ फ़ौलाद, शेख़ भिखारी, मोलवी शेख़ मुहम्मद इत्यादि ने बैयत व ख़िलाफ़त प्राप्त की। जब आपकी प्रसिद्धता बढ़ी तो क़ादिर शाह जो काल्पी का गवर्नर था भी मिलने ऐसे समय पर आया जिस समय आप किसीसे भी नहीं मिलते थे जब आपके दरबानों ने उसे रोका तो उसने इसे अपमान समझा और बुराभला कहता हुआ चला गया घर पहुँचते पहुँचते उसके पूरे बदन में छाले पड़ गये। ये बात उसने अपने पीर सिराज उद्दीन को बतायी तो उन्होंने उसका इलाज आरम्भ किया ही था कि उनका भी सम्पूर्ण शरीर जलकर राख

हो गया। क़ादिर शाह भी ठीक न हो सका उसके शासन भी आपदा से घिर गया शाह होशंग ने मालवा से चलकर काल्पी पर हमला कर दिया सुल्तान इब्राहीम शर्क़ी जौनपुर से चला मगर फिर रास्ते से ही लौट गया।

आकाश वाणी

काल्पी में आपको मीर सैयद सदरे जहॉं का एक पत्र प्राप्त हुआ जिसमें आपको जौनपुर आमन्त्रित किया गया था अतः आप यहॉं से बारा, मूसा नगर, घाटमपुर इत्यादि स्थानों को सुशोभित करते हुए जौनपुर पहुॅंचे और शहर से बाहर विश्राम किया मीर सदरे जहॉं, अशरफ़ ख़ॉं, सुल्तान इब्राहीम शर्क़ी इत्यादि ने आपका स्वागत किया और इब्राहीम शर्क़ी के मुख्य बाग़ में आपको महमान रखा गया। यहॉं आपसे अनगिनत चमत्कार प्रकट हुए क़ाज़ी शहाब उद्दीन दौलताबादी ने पहले विरोध किया बाद में बैयत हुए।शाह फ़ज़्लउल्लाह बदख़्शानी, मौलाना हुसैन बल्ख़ी, सैयद अजमल जौनपुरी, मौलाना हिसाम उद्दीन सलामती मौलाना क़ाज़ी महमूद क़ाश्गरी आदि प्रमुख हैं जिन्हों ने आपकी सानिध्य प्राप्त की।

हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ने चार वर्ष छः मास सत्रह दिन जौनपुर में विश्राम किया लोगों का विचार था कि अब आप यहॉं से कहीं भी नहीं जायेंगे पर अचानक एक दिन आकाश वाणी हुयी और उस स्थान की ओर संकेत प्राप्त हुआ जो आपकी अन्तिम आरामगाह होगी अतः आप तुरन्त वहॉं से चल दिये रोकने के अथक प्रयास विफल हो गये।

तालाब की लहरों से आवाज़ आई

हज़रत ज़िन्दा शाह मदार जौनपुर से किन्तूर, लखनऊ,मोहान,जायस,आसेवन, सफ़ीपुर, इत्यादि स्थानों को सुशोभित करते हुए क़न्नौज पहुॅंचे।पहुॅंचते ही शेख़ अख़ी जमशेद क़िदवाई, मौलाना अब्दुर्रहमान बिन सैयद अकमल माज़िन्दरानी आपकी ख़िदमत में उपस्थित हुए बैयत व ख़िलाफ़त प्राप्त की। यहॉं लोग झुण्ड के झुण्ड आते और स्लाम स्वीकार करते क़न्नौज से आपने दक्षिण की ओर प्रस्थान किया जंगल ही जंगल था कि एक तालाब नज़र आया जिससे या अज़ीज़ की आवाज़ आ रही थी। यही आपका अन्तिम पड़ाव था। जिसका संकेत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम और आकाशवाणी से हुआ था।

चश्मा जारी हो गया

धीरे धीरे तालाब का पानी सूख गया जब पानी कि कठिनाई बढ़ी तो हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ने अपने ख़लीफ़ा ''यासीन''को अपना असा अर्थात डण्डा देकर कहा जंगल की खुली जगह पर जाकर एक लकीर खींच दो। लकीर खींचते ही पानी उबल पड़ा इस चश्में का नाम यासीन से बाद में ईसन हो गया और इसको मुग़लिया शासन काल में मैनपुरी झील से पश्चिम में जोड़ दिया गया और गंगा में पूर्व में पहले से ही जुड़ी थी।

इस स्थान का एतिहासिक नाम

चूँ कि हज़रत ज़िन्दा शाह मदार इस स्थान पर **818** हिजरी को ठहरे थे इसलिये इसका नाम ख़ैराबाद रखा गया जिसके अदद **818** निकलते हैं बाद में मक्कन सरबाज़ मदारी के नाम पर इस स्थान का नाम पहले मक्कनपुर फिर मकनपुर रह गया। तालाब के सूखते ही आपके अनुयाइयों ने तालाब के मध्य में एक हुजरा निर्मित कर दिया इसके अतिरिक्त आपके अनुयाइयों ने भी तालाब के आस पास मकान निर्मित कर लिये मुख्यता आपके वंशजों ने यहीं रहना पसन्द किया। इनमें आपके साथ आये आपके सगे भाई हज़रत महमूद उद्दीन के वंश में हज़रत अबू मुहम्मद अरगून, हज़रत अबुल हसन तैफ़ूर और हज़रत अबू तुराब फ़न्सूर मुख्य हैं।

दारुन्नूर मकनपुर शरीफ़ में स्थाई विश्राम

यहाँ से भी हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ने हिन्दुस्तान के अनेक शहरो,क़स्बों,गॉवों आदि के भ्रमण किये जैसे मैनपुरी,आगरा,बान्दीकुई,जयपुर,टोंक, दिवली,बूँदी, कोटा,जौनपुर,वाराणसी,विन्ध्याचल इत्यादि जब आप स्थाई तौर पर मकनपुर शरीफ़ में ठहरे तो हर समय लोगों की भीड़ एकत्रित रहती एक मेला सा लगा रहता जुमेंरात के दिन आप हर प्रकार की बातों में भाग लेते थे। .

छेः जमादिउल अव्वल **838** हिजरी को आपने अन्तिम भाशण दिया जिसे खुतबये हुज्जतुल मदार के नाम से स्मरण किया जाता है भाषण के पश्चात आपने हज़रत अबू मुहम्मद अरगून को अपना जानशीन होने की घोषणा की। **17**जमादिउलअव्वल **838**हिजरी को आपका स्वर्गवास हो गया।आपके जनाज़े की नमाज़ हिसामुद्दीन सलामती जौनपुरी ने पढ़ाई। .

हज़रत ज़िन्दा शाह मदार की जनता में प्रसिद्धता

नाम, उपनाम, गुण एवं सदाचार से सम्बन्धित स्थानों के नाम

जैसे मदारपुर, मदारपुरा, मदारीपुर, मदार खेड़ा, मदार चिल्ला, मदार टीकरी, मदार पहाड़ी, मदार बस्ती, मदार पाड़ा, मदार बाड़ी, मदार गेट, मदार डेरा, मदार कोट, मदार घाट, मदार पीठ, पीरूमदारा, दरबारे शाह मदार, शाहे ज़िन्दाँ, मदारस, मदारन इत्यादि नूरपुर, नूरगंज, नूरबाड़ी, नूरकोट, नूरखेड़ा, नूरानीशाह, ज़िन्दाशाहवली, शाहकोट, हईपुर, शाहपुर, शाहघाट, शाहबन्दर, शाहगंज, शाहजमाल, जमालगंज,जमालखेड़ा, ज़्यारत दादा मदार, दाता मदार, दाता जमाल, दादा हयात, शाहवाला, दादा पीर, पीरू मदारा, पीर बहोड़ा इत्यादि

मदार के नाम पर लोगों के नाम

जैसे बदीउज़्ज़माँ, बदीउल मदार,बदीउल हसन, बदीउर्रहमान, बदीउल हक़, अज़मतुल मदार, ख़िदमतुल मदार, नूरुल मदार, मदार बख़्श, मदारी लाल, मदारू, मदार वाला, मदारी शाह, शफ़ीकुल मदार, अच्छे मदार, मीठे मदार इत्यादि

ज़िन्दा शाह मदार से सम्बन्धित मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

मरे को मारें शाह मदार

इस से आशय हज़रत ज़िन्दा शाह मदार को यह दिव्यता Divinity प्राप्त थी कि वह नास्तिक Non believer को नास्तिकता Intidelity से निकाल कर फ़ना (लीनता Destruction) के पद पर आसीन कर देते थे और जो सन्त फ़ना अलफ़ना अर्थात पूर्णत्या अपने को त्याग चुके होते उनको बक़ा बिल्लाह अर्थात ख़ुदा में विलीन कर देते फिर इससे निकाल कर शून्य में पहुँचा देते ।आज कल ये मुहावरा गंजे थे और ओले पड़ गये के के अनुरूप बोला जाता है।

गंगा मदार का साथ क्या?

हज़रत ज़िन्दा शाह मदार की अलौकिक शिक्षा सत्य मार्ग दर्शन पर आधारित थी जब कि हिन्दुओं की आस्था के अनुसार गंगा से जुड़ी हुई कहानियाँ सत्य मार्ग से विचलित कर देती हैं जैसे मोक्ष दायनी पाप हरणी इत्यादि। आज कल

ये मुहावरा ऐसे समय बोला जाता है जब दो लोग विपरीत रास्तों पर जा रहे हों।

बाद जुमें जो कीजो कार्य उसके ज़ामिन शाह मदार

अल्लाह तआला ने कुरआन में कहा है कि जब नमाज़ समाप्त हो जाये तो धर्ती पर फेल जाओ और अल्लाह का सानिध्य तलाश करो इस आदेश की पुष्टि के आधार पर यह मुहावरा बहुत प्रचलित हुआ।

दम मदार बेड़ा पार

इसका आशय हज़रत ज़िन्दा शाह मदार से सहायता प्राप्त करना है यह नारा सर्व प्रथम अब्दुल क़ादिर ज़मीरी ने साहिले मालावार पर जब आपका जहाज़ किनारे लगा तब आपने दिया । सत्य तो ये है कि अल्लाह ने मुहम्मद को हर चीज़ का मदार ठहराया और जब उसने आदम का पुतला तैयार किया तो उसमें सब कुछ डाल दिया परन्तु पुतले में हरकत भी नहीं हुई जब तक मुहम्मद ﷺ का नूर अर्थात दमेमदार उसके मस्तिष्क में नहीं डाला गया नूर रूपी दम पड़ते ही उसका बेड़ा पार होगया अर्थात उस पुतले में जान आगयी।

खायें मदार का गायें सालार का

जैसा कि कुरआन में है कि अल्लाह के सबब कुरैश परिवार को हर जगह सम्मान मिलता था परन्तु वे अल्लाह के स्थान पर बुतों की प्रशंसा करते थे आज कल इसके स्थान पर यह मुहावरा बोला जाता है जिस थाली में खायें उसी में छेद करें ।

दम पीर शाह मदार आखों को रौशनी दिल को क़रार

इस से आशय यह है कि प्रति क्षण हज़रत ज़िन्दा शाह मदार की शिक्षाओं का अनुसरण करना जिससे अल्लाह मुहम्मद और मदार का सानिध्य प्राप्त हो ।

हक़ अल्लाह मुहम्मद मदार

इस से आशय यह है कि अल्लाह मुहम्मद और मदार की अलौकिक शिक्षा ही सत्य मार्ग दर्शक हैं अतः इन्हीं का अनुसरण अनिवार्य है।

ज़िन्दा शाह मदार

हज़रत मुहम्मद ﷺ ने अपनी वास्तविक विशेषताओं से हज़रत बदी उद्दीन कुतबुल मदार को परिपूर्ण कर दिया जिस प्रकार आप समस्त अम्बिया

Prophets में हयातुन्नबी अर्थात ज़िन्दा नबी हैं ठीक इसी प्रकार समस्त वलियों Saints में बदी उद्दीन कुतबुल मदार हयातुल वली, ज़िन्दा शाह मदार, ज़िन्दाने सौफ़, शाहे ज़िन्दॉं, ज़िन्दा वली और हययुल मदार हैं।

बर दोशे मदार अर्शे आज़म पर गया परवर दिगार

हदीस शरीफ़ (मुहम्मद साहब का कथन) है कि मोमिन (orthodox सत्यधर्मावलम्बी) दिल में अल्लाह का अर्श (Paradise परलोक) है। अतः हज़रत ज़िन्दा शाह मदार ने सबसे पहले नफ़ी अस्बात (Refuse & Proof अस्वीकार एवं प्रमाण) को इस प्रकार प्रस्तुत किया कि ला को नाफ़ (तोंदी) से उठाया इलाह ا को सीने से गुज़ारते हुए इल्लल्लाह को कॉंधे से गुज़ारते हुए अल्लाह को अर्श अर्थात दिलपर लेगये तदोपरान्त हर सिलसिले ने ये प्रक्रिया अपनाई और आज भी प्रचलित है। .

इसके अतिरिक्त फ़क़ीरी नहीं लोहे के चने चबाना है, आम खायें बन्दर मारे जायें क़लन्दर, दारो मदार, सदक़ा मदार का, मदार की वंचासी, मदार का मलीदा,मदार की चादर, मदारकी खीर, मदार के पथ, मदार के पण्डे, मदार के मलंग, मदार के मेले, मेले मदार के दिन, मदार का मुंडन, माटी के मदार, एक मदारी सब पे भारी इत्यादि ये मुहावरे और लोकोक्तियॉं वर्षों से सम्पूर्ण एशिया में बोले और समझे जाते हैं अगर इनके कारणों पर ध्यान केंद्रित किया जाये तो पता चलता है कि ये हज़रत ज़िन्दा शाह मदार की प्रसिद्धता एवं उनसे लगाव का उनूठा सुबूत है। .

मदारुल आलमीन

जिस प्रकार रब्बुल आलमीन ने अपने महबूब ﷺ को रहमतुल्लिल आलमीन कहकर पुकारा ठीक इसी प्रकार मुहम्मद ﷺ ने हज़रत ज़िन्दा शाह मदार को मदारुल आलमीन कहकर पुकारा। ऐतिहासिक दृष्टि कोण से जब हज़रत ज़िन्दा शाह मदार मालाबार के साहिल पर पहुॅंचे तो हज़रत मुहम्मद ﷺ ने आलमे मिसाल में प्रकट होकर जिन्दा शाह मदार को 9 लुक़में खीर के खिलाये हर कौल में आपने एक आलम पर विजय प्राप्त की तथा हर आलम का आपको मदार ठहराया गया उदाहरणत्या नासूत,मलकूत,जबरूत,लाहूत,हाहूत,

बाहूत,सियाहूत,महमूदशाही और नसीर अनाक इन नौ आलम का मदार बनाकर मदारुल आलमीन का ख़िताब दिया।

मदार के मलंग

मलंग का शाब्दिक अर्थ है मस्त, मतवाला, पृथक, अविवाहित, अस्हाय वैरागी इत्यादि ये संशोधन सिलसिलय आलिया मदारिया की है। इसके अतिरिक्त हिन्दुस्तान ही नही अपितु सम्पूर्ण विश्व में जितने भी सिलसिले है उनमें मलंग नहीं होते मलंग केवल सिलसिलय मदारिया में ही होते है। ये मलंग एकान्तता का जीवन व्यतीत करते है और समस्त जीवन अल्लाह के ज़िक्र में समर्पित कर देते हैं।हज़रत ज़िन्दाशाह मदार से सम्मानित मलंगों के सात गिरोह निकले जिनमें गिरोहे ख़ादिमान, दीवानगान, तालिबाना, आशिक़ान, अजमलियान, हिसामियान और मख़दूमियान। इनमें चार गिरोह ख़ादिमान, दीवानगान, आशिक़ान और तालिबान को तो पूर्णत्या मदारी सम्बन्ध रखते हैं और मलंग इन्हीं चार गिरोहों से सम्बन्ध रखते हैं। सिलसिलय मदारिया के इतिहास में वर्णित है कि हज़रत जमाल उद्दीन जानेमन जन्नती जो हज़रत ज़िन्दा शाह मदार के उत्तराधिकारी और ग़ौसे पाक की बहिन बीबी नसीबा के पुत्र हैं एक बार हज़रत ज़िन्दाशाह मदार ने बालका अवस्था में प्रेम पूर्वक सर पर हाथ रख दिया था जानेमन ने आजीवन सर से अपने बाल नहीं कटवाये और विवाह आदि भी नहीं किया समस्त मलंग इन्हीं का अनुसरण करते हैं। इनके बालों को भेग कहा जाता है इनके **36—36** हाथ लम्बे बाल भी देखे गये हैं। ये मलंग बहुत ही कमाल के होते हैं हिन्दुस्तान में ही अनगिनत

मलंग हुए हैं।इनमें सुप्रसिद्ध हज़रतअब्दुर्रहमान हाजी बाबा मलंग कल्यान मुम्बई, हज़रत शेख़ अबुल हसनात वली ज़िन्दानी शाह मलंग उर्फ़ मंगू पीर कराची पाकिस्तान, हज़रत कुतबे ग़ौरी कोलार मैसूर, लक्कड़ शाह बहराइच इत्यादि। .

मदार के मेले और उर्स

मदार के मेले एवं उर्स सम्पूर्ण विश्व में मनाये जाते हैं। खुतबये हुज्जतुल मदार की तिथि **4** जमादिउल मदार से **17** जमादिउल मदार सन् **838** हिजरी की स्मृति में संसार के कोने कोने में हज़रत ज़िन्दा शाह मदार के उर्स और मेले होते हैं जैसे मेरठ भरतपुर आदि क्षेत्र में मदार की छड़ियों के नाम से होता है ये मेला भरतपुर, आगरा, मेरठ, बरेली, बदायूँ इत्यादि शहरों से होता हुआ मकनपुर शरीफ़ आता है इस मेले में लोग मिन्नत की बद्धी पहनते हैं सवाल करते हैं मुराद पूरी होने पर बद्धी बढ़ाते हैं जिन स्थानों पर रात को ये मेले होते हैं वहाँ ये चराग़ाँ या मदार के चराग़ कहलाते हैं इसमें चराग़ ही चराग़ नज़र आते हैं जिन स्थानों पर सन्दल की प्रथा प्रचलित है वहाँ इसे सन्दल का मेला कहते हैं क़ायमगंज, शम्साबाद, फ़र्रुख़ाबाद इत्यादि स्थानों पर यह मेला मेंहदियों के नाम से प्रसिद्ध है ये मदार की मेंहदियाँ कहलाता है मगर अस्ल इनकी मदार के उर्स या मेले ही हैं। बाँस बरेली में पहला मदार का मेला क़िले पर पड़ता है दूसरा मदार का मेला बाँस मण्डी में चढ़ता है तीसरा शहामत गंज में चौथा नरयावल में पाँचवाँ फ़रीदपुर में छटा मदार का मेला पीर बहोड़ा के नाम से रुक्न तालाब पर।बरेली शहर में ही अलग अलग स्थानों पर मदार का मेला होता है विचार कीजिये संसार के अनगिनत शहरों का क्या हाल होगा। शाहजहाँपुर, बदायूँ, अलीगढ़ में मदार का मेला बड़े ज़ोर शोर से होता है। अजमेर में मदार टीकरी और मदार दर्वाज़े पर मदार के मेले और उर्स बड़ी धूम से मनाये जाते हैं, हैदराबाद ए.पी. दरगाह मदारशाह चार कमान और कोलम्बो श्री लंका में चिल्ला मदार शाह पर, काल्पी में चिल्ला ज़िन्दा शाह मदार पर, साहिवाल पाकिस्तान में दरबारे शाह मदार पर, हैदराबाद सिंध में फ़क़ीर के पेड़ पर, कराची में मंगूपीर पर, बैरूत, मिस्र, मोरक्को और नेशापुर तबरिस्तान, अफ़ग़ानिस्तान, क़ज़ाकिस्तान, ईराक़, ईरान, नेपाल, बंगलादेश, समरक़न्द इत्यादि में आपकी चिल्लागाहों पर मदार के मेले और उर्स बड़ी धूम से मनाये जाते हैं।तात्पर्य ये कि जहाँ भी आपसे सम्बन्धित चिन्ह हैं वहाँ **6** जमादिउल मदार से **17** जमादिउल मदार तक उर्स या इन तिथियों के आगे पीछे मेले मनाये जाते हैं

बहराईच और मकनपुर शरीफ़ में बहुत बड़े मेले होते हैं। .

मकनपुर शरीफ़ का उर्स दो भागों में विभाजित हो गया जब हज़रत ज़िन्दा शाह मदार का स्वर्गवास हुआ तो उर्स मनाया गया इस समय अरबी महीने के हिसाब से 17 जमादिउल मदार और हिन्दी महीने के हिसाब से माघ की बसन्त पंचमी थी चूँकि अरबी महीने का सम्बन्ध चाँद से है और हिन्दी महीने का मौसम से इस लिये दूसरे वर्ष कुछ श्रद्धालु 17 जमादिउल मदार को तथा कुछ माघ की बसन्त पंचमी को आये इस प्रकार यह पुण्य तिथि दो भागों में विभाजित हो गयी। जमदिउल अव्वल को जमादि उलमदार, मदार का महीना, मदार का चाँद कहा जाने लगा । .

पहला उर्स 6 जमादिउल मदार से 17 जमादिउल मदार तक मनाया जाता है उर्स बड़े मेले के नाम से भी प्रसिद्ध है इसमें देश विदेश से लाखों की संख्या में श्रद्धालु उपस्थित होकर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं। मुग़ल बादशाह दारा शिकोह ने अपनी पुस्तक सफ़ीनतुल औलिया में इसकी पुष्टि करते हुए लिखा है कि मकनपुर शरीफ़ के उर्स में पाँच या छेः लाख की भीड़ होती है । यह उस समय की बात है जब आवागमन के साधन अल्प थे। इस कथन की पुष्टि इस बात से भी होती है कि इस क़स्बे में लगभग 125 मस्जिदें और लगभग 260 कुए थे जिनके अवशेष आज भी मिल जाते हैं। उर्स शरीफ़ के मुख कार्यक्रमों में शग़्ले दम बहाल, कश्ती का मंज़र, डेग का मंज़र, इजलास कुल शरीफ़ इत्यादि। .

दूसरा मेला माघ की बसन्त पंचमी को होता है यह लगभग एक महीने तक चलता है यह उत्तर भारत के कतिपय महान मेलों में उंगलियों पर गिनाजाने वाला मेला है। यह छोटे मेले के नाम से भी प्रसिद्ध है। इस मेले ने तिजारती मेले का रूप ले लिया है। इसका मुख्य पर्व बसन्त पंचमी और कुल शरीफ़ है मेले की सबसे बड़ी विशेषता ये है कि इसमें हर प्रकार के जानवरों का और हर प्रकार की वस्तुओं का बाज़ार अलग अलग लगता है इस में उ०प्र० के हर जनपद से पुलिस और प्रशासन का इंतिज़ाम रहता है। इस मेले के मुख कार्यक्रम इस प्रकार हैं आल इण्डिया मुशायरा, अखिल भारतीय कवि सम्मेलन, आल इण्डिया म्यूज़िक कानफ्रेन्स, कुल शरीफ़, घुड़ दौड़, कुश्ती, नुमाइश इत्यादि। .

اَلنَّاسُ اُمِنَاء عَلیٰ اَنْسَابِہِمْ (اشرف المؤبد)

हर शख़्स अपने नसब पर ख़ुद अमीन है

नसब नामा पिदरी

PEDIGREE-TABLE (Father)

हज़रत सैयद बदी उद्दीन अहमद शाह ज़िन्दाने सौफ़ ﷺ हज़रत क़िदवत उद्दीन अली हलबी ﷺ हज़रत सैयद बहाउद्दीन ﷺ हज़रत सैयद ज़हीर उद्दीन ﷺ हज़रत सैयद अहमद उर्फ़ इस्माईल सानी ﷺ हज़रत सैयद मुहम्मद ﷺ हज़रत सैयद इस्माईल ﷺ हज़रत सैयद इमाम जाफ़र सादिक़ ﷺ हज़रत सैयद इमाम मुहम्मद बाक़र ﷺ हज़रत सैयद इमाम ज़ैनुल आब्दीन ﷺ हज़रत सैयद इमाम हुसैन عليه السلام हज़रत सैयद अली करमुल्लाह वज्हुलकरीम .

नसब नामा मादरी

PEDIGREE-TABLE(Mother)

हज़रत बदी उद्दीन अहमद क़ुतबुल मदार ﷺ सैयदा बीबी हाजरा तबरेज़ी उर्फ़ फ़ात्मा सानी ﷺ हज़रत अब्दुल्लाह जाफ़र तबरेज़ी ﷺ हज़रत सैयद मुहम्मद ज़ाहिद ﷺ हज़रत सैयद अबू मुहम्मद हसन आबिद ﷺ हज़रत सैयद अबू स्वालेह मुहम्मद अब्दुल्लाह सानी ﷺ हज़रत सैयद अबू यूसुफ़ अब्दुल्लाह ﷺ हज़रत सैयद अबुल क़ासिम मुहम्मद मेंहदी ﷺ हज़रत सैयद अब्दुल्लाह महज़ ﷺ हज़रत सैयद हसन मुसन्ना ﷺ हज़रत सैयदना इमाम हसन عليه السلام ह० सैयदना मौला असद उल्लाह हैदरे कर्रार अली मुर्तिज़ा रिज़वानुल्लाह तआला अलैहिम अजमईन .

ज़िन्दा शाह मदार के 99 नाम

ياقطب الذی لا قطب بدیع الدّین الا هو

बदीउन, करीमुन, नूरुन, एनुन, ईनुन, क़वामुन, रिवाज़ुन, इस्मुन, रहीमुन, मजीदुन, हिसामुन, सालेकुन, वलीयुन,रफ़ीउन, इरतिक़ाउन, शमालुन, आमिलुन, हमीदुन, इमादुन, ख़ैरुन, फ़ज़लुन, मदारुन, मालिकुन, महीयुन, सलामुन, मुसल्लिमुन, मुहीमुन, फ़ातेहुन, मुफ़्तहुन, मरकूमुन, मुर्शिदुन, स्वालेहुन, तौफ़ीकुन, ज़िब्दतुन, तशरीफ़ुन, ग़यासुन, वाहिदुन, ज़ाहिरुन, मज़हरुन, ताहिरुन, मुतहर्रुन, नसीरुन, मुहनुन, आलिउन, मुतालिउन, इशारुन, हकीमुन, ख़ादिमुन, नजमुन, सिराजुन, मुनीरुन, शम्सुन, नाफ़िउन, सादिकुन, सिद्दीकुन, मुसददिकुन, हादिउन, मेहदिउन, मुक़ामुन, ज़्याउन, सुल्तानुन, तकूमुन, माहियुन, हाफ़िज़ुन, शाग़िलुन, इमामुन, नासिरुन, क़िदवतुन, नुसरतुन, निज़ामुन, दवाउन, शिफ़ाउन, बक़ाउन, कमालुन, जलालुन, हुज्जतुन, शहाबुन, शाहिदुन, साबितुन, अहियाउन, सआदुन, सईदुन, बहाउन, रुकनुन, मुईनुन, लतीफ़ुन, रफ़ीकुन, शफ़ीकुन, कबीरुन, मुजतमाउन, फ़तहुन, मुफ़तहुन, क़दीरुन, मुहीनुन .

आप को मलायका आसमानों पर मख़्सूस असमा से पुकारते हैं पहले आसमान पर ज़ैनुल्लाह दूसरे पर नज्मुल्लाह तीसरे पर मुज्तमाउल्लाह चौथे पर फ़तेहउल्लाह पॉचवें पर सिफ़तुल्लाह छओ पर मुरीदुल्लाह और सातवें पर बदीउल्लाह .

तारीख़े बदी

ज़िन्दा शाह मदार की रूहानी निस्बतें

Spiritual Relation

हज़रत ज़िन्दा शाह मदार हुज़ूर रसूले पाक सल्ल० से निम्न पाँच निस्बतों जाफ़रिया, तैफ़ूरिया, सिद्दीक़िया, मेहदविया, उवैसिया से साम्बद्ध हैं।

निस्बते जाफ़रिया हज़रत सैयद बदी उद्दीन अहमद शाह ज़िन्दाने सौफ़ ﵁ हज़रत क़िदवत उद्दीन अली हलबी ﵁ हज़रत सैयद बहाउद्दीन ﵁ हज़रत सैयद ज़हीर उद्दीन ﵁ हज़रत सैयद अहमद उर्फ़ इस्माईल सानी ﵁ हज़रत सैयद मुहम्मद ﵁ हज़रत सैयद इस्माईल ﵁ हज़रत सैयद इमाम जाफ़र सादिक़ ﵁ हज़रत सैयद इमाम मुहम्मद बाक़र ﵁ हज़रत सैयद इमाम ज़ैनुल आब्दीन ﵁ हज़रत सैयद इमाम हुसैन ؑ हज़रत सैयद अली करमुल्लाह वज्हुलकरीम

निस्बते तैफ़ूरिया हज़रत बदी उद्दीन शाह अहमद ज़िन्दाने सौफ़ ﵁ हज़रत बा यज़ीदे पाक बुस्तामी उर्फ़ तैफ़ूर शामी ﵁ हज़रत हबीब अजमी ﵁ हज़रत हसन बसरी ﵁ हज़रत अली करम उल्लाह वज्हुलकरीम

निस्बते सिद्दीक़िया हज़रत मदारुल आलमीन सैयद बदी उद्दीन अहमद ज़िन्दा शाह मदार ﵁ हज़रत बायज़ीदे पाक बुस्तामी उर्फ़ तैफ़ूर शामी ﵁ हज़रत ऐन उद्दीन शामी ﵁ हज़रत अब्दुल्लाह अलमबरदार ﵁ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ ﵁ हज़रत मुहम्मद रसूलल्लाह ﷺ

निस्बते मेहदविया हज़रत बदी उद्दीन अहमद क़ुतबुल मदार ﵁ को रूहे पाक हज़रत मउद मेहंदी आख़िरुज़्ज़माँ ؑ से रूहानी वाबस्तगी हासिल हुई और क़ुर्बेक़यामत जो सिलसिला बाक़ी रहेगा वह मेहदविया मदारिया ही होगा

निस्बते उवैसिया हज़रत बदी उद्दीन अहमद मदारुल आलमीन ﵁ रास्त क़ल्बे रहमतल्लिल आलमीन नूरे मुजस्सम ﷺ ब ईं निस्बते क़ुतबुल मदार -फ़रमाते हैं- اکتب اسمک ثم اسمی ثم اسم رسول الله ﷺ

सन् मदारे आज़म

सन् हिजरी का आरम्भ मुहम्मद साहब की मक्के से मदीने की हिजरत से हुआ और वर्ष की प्रथम तिथि मुहर्रम माह की पहली है इसी प्रकार सन् मदारे आज़म का आरम्भ हज़रत ज़िन्दा शाह मदार के जन्म सन् **242** हिजरी से हुआ वर्ष की प्रथम तिथि यकुम शव्वाल अर्थात सादिरुल बदी से हुआ ।

सन् मदारे आज़म का आरम्भ शेख़ अब्दुल क़ादिर ज़मीरी बग़दादी ने किया।

जमाले बदी

अरबी महीने	मदारी महीने	चाँद के महीने
मुहर्रमुल हराम	सादिरुल बदी	मुहर्रम का चाँद
सफ़रुल मुज़फ़्फ़र	क़ादिरुल बदी	तीरा तेज़ी का चाँद
रबीउल अव्वल	शाकिरुल बदी	बारह वफ़ात का चाँद
रबीउस सानी	नासिरुल बदी	हमसाये का चाँद
जमादिउल अव्वल	सायमुद्दहर	मदार का चाँद
जमादिउस सानी	यासिरुल अव्वल	शेख़ बुर्राक़ का चाँद
रजबुल मु रजब	यासिरुस्सानी	रजब का चाँद
शाबानुल मुअज़्ज़म	आमिरुल अव्वल	शबे बारात का चाँद
रमज़ानुल मुबारक	आमिरुल आख़िर	रमज़ान का चाँद
शव्वालुल मुकर्रम	तरक़ीमुल अरफ़ा	ईद का चाँद
ज़ी क़ादह	अज़बुल बयान	ख़ालिक़ का चाँद
ज़िल हज्ज	फ़ाख़िरुल जिन्नाह	बक़रा ईद का चाँद

जमादिउल अव्वल को जमादिउल मदार भी कहते हैं

लेखक की वंशावली

वंशानुक्रम(शजरह)

PEDIGREE-TABLE

Saru'j
Nahur
Tarikh
IBRAHIM
ISMAIL
Hedaar
Iraam
Ewad
Mazzi
Sami
Zarih
Nahis
Mukasir
Aiham
Afnad
Aisar
Zeeshan
Aizi
Ir'awa
Yalhan
Yahzin
Yasribi
Sanbar
Hamdan
Ad Daha
'Ubaid
'Abqar
A'efi
Makhi
Nahish
Jahim
Tabikh
Yadlaf
Baldas
Hiza
Nashid
'Awwam
Obai
Qamwal
Buz
Awz
Salaman
Humaisi'a
Awad
Adnan
Ma'ad
Nizaar
Mudar
ilyas
Mudrikah
Khuzaymah
Kinanah
Al-Nadar
Malik
Fahr
Ghalib
Lu'ayy
Ka'ab
Murrah
Kilab

Qussayy
Abd-Munaf
Hashim
Abdul Muttalib (Shaiba)
Abdullah
MUHAMMAD Rsulallah S.A.W.
FATIMA w/o ALI a.
Husain
Zainul Abdeen
Baqar
Jafar Sadiq
Ismail
Muhammad
Ismail
Zahir Uddin
Baha Uddin
Ali Qidwat Uddin
Mahmud Uddin B/O AHAMAD Badi Uddin
Jafar
Muhammad
Abu sayeed
Nizam Uddin
Abdur Razzaq
Ishaq
Muhammad
Ismsil
Ibrahim
Muhammad
Daud
Muhammad
Yaseen
Vajih Uddin
Kabir Uddin
Abdullah
ARGHOON
Mamood
Abul Muzaffar
Umar
Abdurrahman
Phool Mahalli
Maroof
Daud
Abdul Fateh
Abdurrasool
Azizullah
Abdul Ghani
Abdul Azam
KHANE ALAM
Fidai Rasool
Altaf Husain
Murtiza Husain
Iqtida Husain
Faiz Anwar, Yawar Altaf

मार्फ़त का सरल तरीक़ा

मदारिया साँप सीढ़ी

फ़ैज़ अनवर, यावर अल्ताफ़,सिदरा फ़रहीन और माहिरा जाफ़रीन की इच्छा के अनुरूप मारफ़त का आसान तरीक़ा प्रस्तुत करते हुए गर्व हो रहा है आशा है कि उपरोक्त बच्चों के साथ अन्य बच्चे भी इस से लाभान्वित होंगे।

डा०इक़तिदा हुसैन जाफ़री''आमिर''
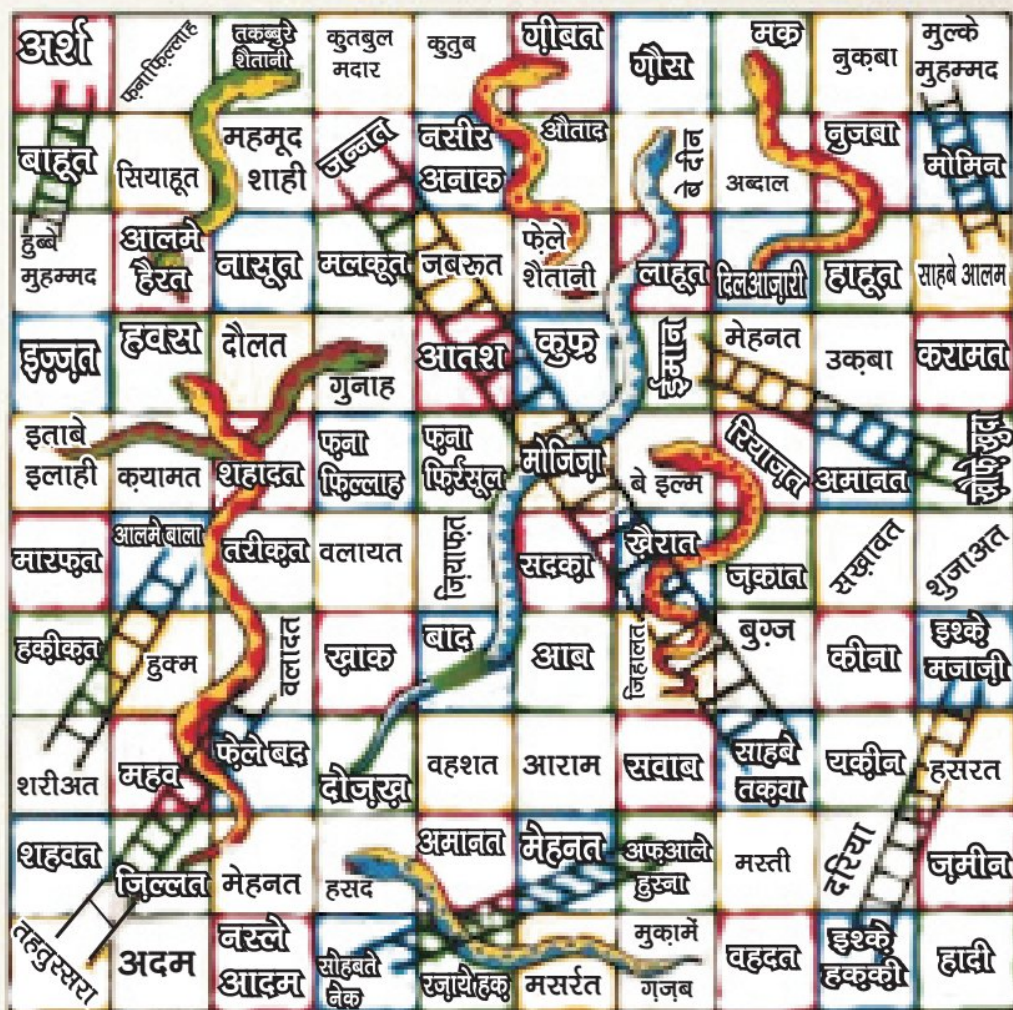
सलाम मदारे आज़म

अस्सलाम ऐ दीने अहमद के सितारे अस्सलाम फ़ात्मा, हसनैन, अली के माह पारे अस्सलाम
लौह, कुर्सी और क़लम पर भी तुझे है इख़्तियार
और ज़मीनो आस्माँ को तेरे दम से है क़रार
हैं सताइश कर रहे तेरी फ़रिश्ते बे शुमार
कर रहे हैं तेरी अज़मत को ये सारे अस्सलाम अस्सलाम ऐ दीने अहमद के सितारे अस्सलाम
तुझ में है सिद्दीक़े अकबर की सदाक़त रूनुमा
है उमर फ़ारूक़ की तुझ में अदालत की अदा
और उसमाने ग़नी है सख़ावत बे बहा
बहरे इल्मे मुरतिज़ा के बहते धारे अस्सलाम अस्सलाम ऐ दीने अहमद के सितारे अस्सलाम
ठोकरों से तुमने मुर्दों को भी ज़िन्दा करदिया
आँख अन्धे को मिली और बॉझ को बेटा मिला
तेरे दर पर जो भी आया उसका दामन भर गया
ऐ ग़रीबों बे सहारों के सहारे अस्सलाम अस्सलाम ऐ दीने अहमद के सितारे अस्सलाम
तू है मिफ़ताहे अवारिज़ तू है मिस्बाहुल हुदा
तुझसा औसाफ़े हमीदा में नहीं है दूसरा
समदियत के मर्तबे ने तुझ को बाला कर दिया
ऐ कुराने इल्मो हिक्मत के सिपारे अस्सलाम अस्सलाम ऐ दीने अहमद के सितारे अस्सलाम
बा यज़ीदे पाक से है तेरी निस्बत बिल यक़ीं
औलिया सब तेरे ताबे हैं मदारुल आलमीं
दर पे सब आमिर खड़े हैं ख़म किये अपनी जबीं
फ़ात्मा सानी अली हलबी के प्यारे अस्सलाम अस्सलाम ऐ दीने अहमद के सितारे अस्सलाम

तमामशुद